

Time Allowed :3 Hours

Maximum Marks :70

Total Questions :10

General Instructions

Read the following instructions very carefully and strictly follow them:

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्देशित हैं।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. यह प्रश्न-पत्र दो खंडों - खंड 'A' तथा खंड 'B' में विभाजित है।
4. इस प्रश्न-पत्र के खंड 'A' में 20 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं, जिनमें दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चयन करना है।
5. ओ.एम.आर. उत्तर पत्रिका में तीन अथवा अधिकतम कॉलम क्लाइंट पेन से सही विकल्प वाले गोलों को अच्छी तरह से भरना देना है।
6. खंड 'B' के बहुविकल्पीय प्रश्नों हेतु उत्तर प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित है।
बहुविकल्पीय प्रश्नों हेतु उत्तर: सभी प्रश्नों के उत्तर
7. देने का प्रयास कीजिए। साथ ही उत्तर देने में कोई भी जल्दबाजी न करें।
8. प्रत्येक प्रश्न के समूह के बाद अंक दिए गए हैं।
9. खंड 'B' में वर्णात्मक प्रश्न पूछे गए हैं; इसके लिए कुल 50 अंक निर्धारित हैं।
10. खंड 'B' के प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट रूप से लिखा जाए, जो प्रश्न आता हो उस पर समय दें।
11. वर्णात्मक प्रश्नों के उत्तर देते समय सुंदर, स्पष्ट और पढ़ने में ध्यान दें।

खण्ड - 'क'

1. 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक हैं

- (A) प्रेमचन्द
- (B) हजारी प्रसाद द्विवेदी
- (C) जयशंकर प्रसाद
- (D) महावीरप्रसाद द्विवेदी

Correct Answer: (D) महावीरप्रसाद द्विवेदी

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के एक महत्वपूर्ण युग, 'द्विवेदी युग', की प्रमुख पत्रिका और उसके सम्पादक से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:

'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन इंडियन प्रेस, प्रयागराज से सन् 1900 में आरम्भ हुआ।

सन् 1903 में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी इसके सम्पादक बने और 1920 तक इसके सम्पादन का कार्य किया।

उनके सम्पादन काल में 'सरस्वती' पत्रिका ने हिन्दी भाषा के परिष्कार, व्याकरण की शुद्धता और साहित्य को नई दिशा देने में अभूतपूर्व योगदान दिया।

इसी कारण इस युग का नामकरण 'द्विवेदी युग' उन्हीं के नाम पर हुआ।

अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि प्रेमचन्द, हजारी प्रसाद द्विवेदी और जयशंकर प्रसाद 'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक नहीं थे।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'सरस्वती' पत्रिका के यशस्वी सम्पादक आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी थे।

Quick Tip

हिन्दी साहित्य के प्रमुख युगों (जैसे- भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद) की प्रमुख पत्रिकाओं और उनके सम्पादकों के नाम अवश्य याद रखें। 'सरस्वती' और महावीरप्रसाद द्विवेदी का संबंध विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

2. 'निर्मला' किस विधा की रचना है ?

- (A) निबन्ध
- (B) उपन्यास
- (C) जीवनी
- (D) आत्मकथा

Correct Answer: (B) उपन्यास

Solution:**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिन्दी साहित्य की प्रमुख रचनाओं और उनकी साहित्यिक विधा (genre) की पहचान से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:

'निर्मला' उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास है।

इसकी कथा का केन्द्र अनमेल विवाह और दहेज प्रथा की समस्या है।

यह एक उपन्यास है, न कि निबंध (किसी विषय पर विचारात्मक लेख), जीवनी (किसी अन्य व्यक्ति का

जीवन-चरित्र) या आत्मकथा (स्वयं का लिखा जीवन-चरित्र)।
अतः, सही विधा 'उपन्यास' है।

Step 3: Final Answer:

'निर्मला' एक उपन्यास विधा की रचना है।

Quick Tip

प्रमुख लेखकों जैसे प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि की कम से कम 2-3 प्रसिद्ध रचनाओं की विधा (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध) अवश्य याद रखें।

3. 'पंचपात्र' के लेखक हैं

- (A) जयशंकर प्रसाद
- (B) रामचन्द्र शुक्ल
- (C) पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी
- (D) जयप्रकाश भारती

Correct Answer: (C) पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न एक विशिष्ट साहित्यिक कृति और उसके लेखक की पहचान से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:

'पंचपात्र' एक प्रसिद्ध निबन्ध-संग्रह है।

इसके लेखक पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी जी हैं।

बख्शी जी द्विवेदी युग के एक महत्वपूर्ण साहित्यकार, विशेषकर ललित निबन्धकार के रूप में जाने जाते हैं।

अन्य लेखक इस कृति से संबंधित नहीं हैं।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'पंचपात्र' के लेखक पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी हैं।

Quick Tip

अपनी पाठ्यपुस्तक में संकलित लेखकों और उनकी प्रमुख रचनाओं की एक सूची बनाकर याद करना परीक्षा के लिए बहुत उपयोगी होता है।

4. 'हिमालय की पुकार' के लेखक हैं

- (A) जयशंकर प्रसाद
- (B) भगवतशरण उपाध्याय
- (C) रामधारी सिंह 'दिनकर'
- (D) जयप्रकाश भारती

Correct Answer: (D) जयप्रकाश भारती

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न आधुनिक हिन्दी गद्य की एक कृति और उसके लेखक की पहचान से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:

'हिमालय की पुकार' प्रसिद्ध बाल-साहित्यकार और लेखक जयप्रकाश भारती जी की रचना है।

भारती जी ने विज्ञान-संबंधी और प्रेरक साहित्य की रचना प्रमुख रूप से की है।

जयशंकर प्रसाद, दिनकर और भगवतशरण उपाध्याय की लेखन शैली और विषय-वस्तु भिन्न हैं और उन्होंने यह रचना नहीं लिखी है।

Step 3: Final Answer:

'हिमालय की पुकार' के लेखक जयप्रकाश भारती हैं।

Quick Tip

लेखकों को उनके लेखन के मुख्य विषय (जैसे- जयप्रकाश भारती - विज्ञान और बाल साहित्य, दिनकर - राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य) से जोड़कर याद रखने से रचनाओं को पहचानने में आसानी होती है।

5. 'सेवासदन' के लेखक हैं

- (A) रामकुमार वर्मा
- (B) जगदीशचंद्र माथुर
- (C) मुंशी प्रेमचंद
- (D) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

Correct Answer: (C) मुंशी प्रेमचंद

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिन्दी के एक कालजयी उपन्यास और उसके लेखक की पहचान से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:

'सेवासदन' मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखा गया एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसका प्रकाशन 1918 में हुआ था।

यह उपन्यास सामाजिक समस्याओं, विशेषकर महिलाओं की स्थिति पर केन्द्रित है।

'सेवासदन' को प्रेमचंद के लेखन में एक मील का पत्थर माना जाता है, जहाँ से उन्होंने यथार्थवादी सामाजिक उपन्यासों की शुरुआत की।

रामकुमार वर्मा (एकांकीकार), जगदीशचंद्र माथुर (नाटककार) और आचार्य रामचंद्र शुक्ल (आलोचक) इस कृति के लेखक नहीं हैं।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'सेवासदन' के लेखक मुंशी प्रेमचंद हैं।

Quick Tip

प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यासों जैसे 'सेवासदन', 'गबन', 'निर्मला', 'गोदान' के नाम और उनकी विषय-वस्तु को याद रखना हिन्दी साहित्य के प्रश्नों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

6. 'रीतिकाल' के कवि हैं

- (A) नागार्जुन
- (B) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
- (C) महावीरप्रसाद द्विवेदी
- (D) मतिराम

Correct Answer: (D) मतिराम

Solution:**Step 1: Understanding the Concept:**

यह प्रश्न हिन्दी काव्य के विभिन्न कालों और उनसे संबंधित कवियों की पहचान पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:

हिन्दी साहित्य में लगभग 1643 ई. से 1843 ई. तक के काल को 'रीतिकाल' कहा जाता है। इस काल के कवियों की प्रमुख प्रवृत्ति शृंगार और अलंकारिकता थी।

मतिराम रीतिकाल के एक प्रसिद्ध कवि हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ 'रसराज' और 'ललित ललाम' हैं।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण:

- (A) नागार्जुन: प्रगतिवादी युग के कवि हैं।
- (B) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र: आधुनिक काल (भारतेन्दु युग) के प्रवर्तक हैं।

- (C) महावीरप्रसाद द्विवेदी : आधुनिक काल (द्विवेदी युग) के प्रवर्तक हैं।

Step 3: Final Answer:

दिए गए विकल्पों में से मतिराम 'रीतिकाल' के कवि हैं।

Quick Tip

हिन्दी साहित्य के चारों कालों (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल) के कम से कम 3-4 प्रमुख कवियों के नाम याद कर लें। इससे काल-विभाजन से संबंधित प्रश्न हल करने में आसानी होगी।

7. 'दूसरा सप्तक' प्रकाशित हुआ

- (A) सन् 1943 ई० में
- (B) सन् 1951 ई० में
- (C) सन् 1959 ई० में
- (D) सन् 1979 ई० में

Correct Answer: (B) सन् 1951 ई० में

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न आधुनिक हिन्दी कविता के 'प्रयोगवाद' के आरंभ से जुड़ी एक महत्वपूर्ण घटना 'तार सप्तक' श्रृंखला के प्रकाशन वर्ष से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:

अज्ञेय के सम्पादन में चार 'सप्तको' का प्रकाशन हुआ, जो प्रयोगवादी और नई कविता के विकास में मील के पत्थर हैं। इनके प्रकाशन वर्ष इस प्रकार हैं:

- तार सप्तक : सन् 1943 ई.
- दूसरा सप्तक : सन् 1951 ई.
- तीसरा सप्तक : सन् 1959 ई.
- चौथा सप्तक : सन् 1979 ई.

प्रश्न में 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष पूछा गया है, जो कि सन् 1951 ई. है।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'दूसरा सप्तक' सन् 1951 ई. में प्रकाशित हुआ।

Quick Tip

चारों सप्तकों के प्रकाशन वर्ष (1943, 1951, 1959, 1979) क्रम से याद कर लें। यह आधुनिक कविता से संबंधित एक बहुत ही सामान्य और महत्वपूर्ण प्रश्न है।

8. 'नीहार' के रचनाकार हैं

- (A) महादेवी वर्मा
- (B) धर्मवीर भारती
- (C) रामनरेश त्रिपाठी
- (D) श्यामनारायण पाण्डेय

Correct Answer: (A) महादेवी वर्मा

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न छायावादी युग की एक प्रमुख कवयित्री और उनकी महत्वपूर्ण काव्य-कृति से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:

'नीहार' आधुनिक युग की मीरा कही जाने वाली महादेवी वर्मा का पहला काव्य-संग्रह है। यह छायावादी काव्य का एक प्रमुख ग्रन्थ है, जिसमें वेदना और रहस्यवाद के स्वर प्रमुख हैं। महादेवी वर्मा की अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं - रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, और यामा। अन्य विकल्प इस कृति के रचनाकार नहीं हैं।

Step 3: Final Answer:

'नीहार' के रचनाकार महादेवी वर्मा हैं।

Quick Tip

छायावाद के चार स्तम्भ - प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा - की प्रमुख काव्य-कृतियों के नाम अवश्य याद रखें। 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत' को क्रम से याद रखना भी उपयोगी है।

9. 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता किस काव्य-संग्रह से ली गई है ?

- (A) यामा
- (B) युगचरण
- (C) साकेत

(D) रश्मिरथी

Correct Answer: (B) युगचरण

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न एक प्रसिद्ध कविता और उसके मूल काव्य-संग्रह की पहचान से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:

'पुष्प की अभिलाषा' ("चाह नहीं, मैं सुरबाला के...") एक अत्यंत प्रसिद्ध राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता है।

इसके रचयिता पं. माखनलाल चतुर्वेदी हैं, जिन्हें 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से भी जाना जाता है।

यह कविता उनके काव्य-संग्रह 'युगचरण' में संकलित है।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण:

- (A) यामा : महादेवी वर्मा का काव्य-संग्रह है।
- (C) साकेत: मैथिलीशरण गुप्त का महाकाव्य है।
- (D) रश्मिरथी : रामधारी सिंह 'दिनकर' का खण्डकाव्य है।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'पुष्प की अभिलाषा' कविता 'युगचरण' काव्य-संग्रह से ली गई है।

Quick Tip

अत्यधिक प्रसिद्ध कविताओं के रचयिता के साथ-साथ उनके काव्य-संग्रह का नाम भी याद रखने का प्रयास करें, क्योंकि परीक्षाओं में अब ऐसे गहरे प्रश्न पूछे जाने लगे हैं।

10. 'छायावाद युग' की मुख्य विशेषता है

- (A) युद्धों का सजीव वर्णन
- (B) भक्ति की प्रधानता
- (C) यथार्थ चित्रण
- (D) प्रकृति का मानवीकरण

Correct Answer: (D) प्रकृति का मानवीकरण

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के 'छायावाद युग' की प्रमुख प्रवृत्तियों (विशेषताओं) की पहचान पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:

छायावाद (लगभग 1918-1936 ई.) की प्रमुख विशेषताएँ हैं - व्यक्तिवाद की प्रधानता, शृंगार भावना, रहस्यवाद, वेदना और निराशा, तथा प्रकृति का मानवीकरण।

'प्रकृति का मानवीकरण' का अर्थ है प्रकृति को एक जीवित सत्ता मानकर उस पर मानवीय भावनाओं और क्रिया-कलापों का आरोप करना। यह छायावादी कवियों (जैसे पंत, प्रसाद) का प्रिय विषय था।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण:

- (A) युद्धों का सजीव वर्णन: वीरगाथा काल (आदिकाल) की विशेषता है।
- (B) भक्ति की प्रधानता : भक्तिकाल की विशेषता है।
- (C) यथार्थ चित्रण: प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की विशेषता है।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'प्रकृति का मानवीकरण' छायावाद युग की मुख्य विशेषता है।

Quick Tip

प्रत्येक साहित्यिक काल की 2-3 मुख्य विशेषताएँ उदाहरण सहित याद कर लें। यह वस्तुनिष्ठ और वर्णनात्मक दोनों प्रकार के प्रश्नों के लिए उपयोगी है।

11. 'करुण' रस का स्थायी भाव है

- (A) रति
- (B) हास
- (C) शोक
- (D) निर्वेद

Correct Answer: (C) शोक

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न काव्यशास्त्र के 'रस' सिद्धांत से संबंधित है, जिसमें प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव निश्चित होता है।

Step 2: Detailed Explanation:

'करुण रस' का स्थायी भाव 'शोक' होता है। जब किसी प्रिय व्यक्ति या वस्तु के विनाश या अनिष्ट से हृदय में शोक का भाव उत्पन्न होता है, तो वहाँ करुण रस की निष्पत्ति होती है।

अन्य स्थायी भावों का विश्लेषण:

- (A) रति: शृंगार रस का स्थायी भाव है।
- (B) हास: हास्य रस का स्थायी भाव है।
- (D) निर्वेद: शांत रस का स्थायी भाव है।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'करुण' रस का स्थायी भाव 'शोक' है।

Quick Tip

सभी नौ रसों (और बाद में जोड़े गए दो रसों) के स्थायी भावों की एक तालिका बनाकर याद कर लें। यह हिन्दी काव्यशास्त्र का एक मूलभूत और अक्सर पूछा जाने वाला प्रश्न है।

12. जहाँ उपमेय को उपमान पर सीधा आरोपित कर दिया जाता है तो वहाँ कौन-सा अलंकार होगा ?

- (A) उपमा अलंकार
- (B) रूपक अलंकार
- (C) उत्प्रेक्षा अलंकार
- (D) अनुप्रास अलंकार

Correct Answer: (B) रूपक अलंकार

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न अर्थालंकार के एक प्रमुख भेद की परिभाषा पर आधारित है।

Step 2: Detailed Explanation:

जहाँ गुणों की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय (जिसकी तुलना की जाए) में उपमान (जिससे तुलना की जाए) का अभेद आरोप कर दिया जाता है, यानी दोनों को एक ही मान लिया जाता है, वहाँ 'रूपक अलंकार' होता है।

उदाहरण: "चरन-कमल बंदौ हरि राइ।" - यहाँ 'चरण' (उपमेय) पर 'कमल' (उपमान) का सीधा आरोप है, दोनों को एक मान लिया गया है।

अन्य अलंकारों से भेद:

- उपमा : में 'सा', 'सम', 'जैसा' आदि वाचक शब्दों से तुलना होती है।
- उत्प्रेक्षा : में 'मनु', 'मानो', 'जानो' आदि शब्दों से संभावना व्यक्त की जाती है।
- अनुप्रास: में वर्णों की आवृत्ति होती है।

Step 3: Final Answer:

जहाँ उपमेय पर उपमान का सीधा आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

Quick Tip

उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा के बीच का सूक्ष्म अंतर याद रखें:

- उपमा (तुलना): मुख चन्द्रमा जैसा सुन्दर है।
- रूपक (अभेद आरोप): मुख-चन्द्रमा देखो।
- उत्प्रेक्षा (संभावना): मुख मानो चन्द्रमा है।

13. 'सोरठा' किस प्रकार का छन्द है ?

- (A) अर्द्ध-सम मात्रिक छंद
- (B) सममात्रिक छंद
- (C) विषममात्रिक छंद
- (D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (A) अर्द्ध-सम मात्रिक छंद

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न काव्यशास्त्र के 'छन्द' प्रकरण से है, जिसमें छन्दों को मात्राओं की गणना के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।

Step 2: Detailed Explanation:

मात्रिक छंद तीन प्रकार के होते हैं:

1. **सम मात्रिक छंद** : जिसके सभी चरणों में मात्राएँ समान हों (जैसे- चौपाई)।
 2. **अर्द्ध-सम मात्रिक छंद** : जिसके विषम (पहले, तीसरे) चरणों और सम (दूसरे, चौथे) चरणों में मात्राएँ समान हों (जैसे- दोहा, सोरठा)।
 3. **विषम मात्रिक छंद** : जिसके चरणों में मात्राएँ असमान हों (जैसे- कुण्डलिया)।
- 'सोरठा' एक अर्द्ध-सम मात्रिक छंद है। इसके विषम चरणों (1 और 3) में 11-11 मात्राएँ तथा सम चरणों (2 और 4) में 13-13 मात्राएँ होती हैं। यह दोहे का उल्टा होता है।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'सोरठा' एक अर्द्ध-सम मात्रिक छंद है।

Quick Tip

दोहा और सोरठा की मात्राओं की व्यवस्था को एक साथ याद करें। दोहा (13, 11) और सोरठा (11, 13)। यह याद रखने से दोनों छंदों को पहचानना आसान हो जाता है।

14. 'निर्गुण' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है

- (A) नि
- (B) गुण
- (C) नीर
- (D) निर्

Correct Answer: (D) निर्

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिन्दी व्याकरण के 'उपसर्ग' से संबंधित है। उपसर्ग वे शब्दांश हैं जो किसी शब्द के आरम्भ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं।

Step 2: Detailed Explanation:

'निर्गुण' शब्द का संधि-विच्छेद करने पर हमें 'निर् + गुण' प्राप्त होता है।

यहाँ 'निर्' एक उपसर्ग है जिसका अर्थ होता है 'बिना' या 'रहित'।

अतः 'निर्गुण' का अर्थ है 'गुणों से रहित'।

विसर्ग संधि के नियम के अनुसार, जब 'निर्' उपसर्ग 'गुण' शब्द से मिलता है, तो आधा 'र्' अगले वर्ण 'ग' के ऊपर रेफ (ृ) के रूप में लग जाता है।

विकल्प (A) 'नि' और (C) 'नीर' गलत हैं। (B) 'गुण' मूल शब्द है, उपसर्ग नहीं।

Step 3: Final Answer:

'निर्गुण' शब्द में 'निर्' उपसर्ग है।

Quick Tip

उपसर्ग पहचानते समय शब्द का मूल अर्थवान अंश (मूल शब्द) अलग करने का प्रयास करें। शेष बचा हुआ आरम्भिक अंश ही उपसर्ग होता है। जैसे 'निर्गुण' में मूल शब्द 'गुण' है।

15. 'नीलकमल' में कौन-सा समास है ?

- (A) द्विगु समास
- (B) कर्मधारय समास
- (C) तत्पुरुष समास
- (D) बहुव्रीहि समास

Correct Answer: (B) कर्मधारय समास

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिन्दी व्याकरण के 'समास' प्रकरण से संबंधित है, जिसमें दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक नया शब्द बनाया जाता है।

Step 2: Detailed Explanation:

'नीलकमल' का समास-विग्रह होता है - नीला है जो कमल।

जिस समास में पहला पद विशेषण (गुण बताने वाला) और दूसरा पद विशेष्य (जिसकी विशेषता बताई जाए) होता है, वहाँ कर्मधारय समास होता है।

यहाँ 'नील' (नीला) विशेषण है और 'कमल' विशेष्य है।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण:

- (A) द्विगु समास: में पहला पद संख्यावाची होता है।
- (C) तत्पुरुष समास: में कारक चिह्नों का लोप होता है।
- (D) बहुव्रीहि समास: में दोनों पद मिलकर किसी तीसरे अर्थ का बोध कराते हैं।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'नीलकमल' में कर्मधारय समास है।

Quick Tip

कर्मधारय समास को पहचानने की सरल विधि है विग्रह करके देखना। यदि विग्रह में 'है जो' या 'के समान' आए, तो वहाँ कर्मधारय समास होता है।

16. 'देवनदी' का पर्यायवाची शब्द है

- (A) यमुना
- (B) सरयू
- (C) गंगा
- (D) सरस्वती

Correct Answer: (C) गंगा

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिन्दी शब्द-भंडार के अंतर्गत 'पर्यायवाची' (समानार्थी) शब्दों से संबंधित है।

Step 2: Detailed Explanation:

'देवनदी' का शाब्दिक अर्थ है 'देवताओं की नदी'।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, गंगा नदी स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुई थी, इसलिए उन्हें 'देवनदी', 'सुरसरि', 'मंदाकिनी', 'भागीरथी' आदि नामों से जाना जाता है।

अतः, 'देवनदी' गंगा का पर्यायवाची है।

यमुना, सरयू और सरस्वती अन्य पवित्र नदियाँ हैं, परन्तु 'देवनदी' विशेष रूप से गंगा के लिए प्रयुक्त

होता है।

Step 3: Final Answer:

'देवन्दी' का पर्यायवाची शब्द 'गंगा' है।

Quick Tip

प्रमुख नदियों, देवताओं, और प्राकृतिक तत्वों (सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, आकाश) के पर्यायवाची शब्द विशेष रूप से महत्वपूर्ण होते हैं और अक्सर परीक्षाओं में पूछे जाते हैं।

17. 'युष्माभिः' शब्द में विभक्ति एवं वचन है

- (A) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
- (B) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
- (C) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन
- (D) षष्ठी विभक्ति, एकवचन

Correct Answer: (A) तृतीया विभक्ति, बहुवचन

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न संस्कृत व्याकरण के 'शब्द-रूप' से संबंधित है, जिसमें सर्वनाम शब्दों को विभिन्न विभक्तियों और वचनों में रूपांतरित किया जाता है।

Step 2: Detailed Explanation:

'युष्माभिः' शब्द 'युष्मद्' (अर्थ- तुम) सर्वनाम का रूप है।

'युष्मद्' शब्द के तृतीया विभक्ति के रूप इस प्रकार होते हैं:

- एकवचन: त्वया
- द्विवचन: युवाभ्याम्
- बहुवचन: युष्माभिः

अतः, 'युष्माभिः' में तृतीया विभक्ति और बहुवचन है। इसका अर्थ होता है 'तुम सब के द्वारा'।

Step 3: Final Answer:

'युष्माभिः' शब्द में तृतीया विभक्ति, बहुवचन है।

Quick Tip

'अस्मद्' (मैं) और 'युष्मद्' (तुम) के शब्द-रूप परीक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन्हें अच्छी तरह से कंठस्थ कर लें।

18. विकारी पद कितने प्रकार के होते हैं ?

- (A) दो
- (B) तीन
- (C) आठ
- (D) चार

Correct Answer: (D) चार

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिन्दी व्याकरण में पदों के वर्गीकरण से संबंधित है। पदों को विकार (परिवर्तन) के आधार पर दो भागों में बाँटा जाता है - विकारी और अविकारी।

Step 2: Detailed Explanation:

विकारी पद : वे पद जिनका रूप लिंग, वचन, कारक आदि के कारण बदल जाता है, विकारी पद कहलाते हैं।

ये चार प्रकार के होते हैं:

1. संज्ञा : (जैसे- लड़का, लड़के, लड़कों)
2. सर्वनाम : (जैसे- मैं, मेरा, मुझे)
3. विशेषण : (जैसे- अच्छा, अच्छे, अच्छी)
4. क्रिया : (जैसे- जाता है, जाती है, जाते हैं)

अविकारी पद भी चार प्रकार के होते हैं (क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादि-बोधक)।

Step 3: Final Answer:

अतः, विकारी पद चार प्रकार के होते हैं।

Quick Tip

याद रखें: विकारी = 4 (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया) और अविकारी = 4। कुल पद भेद 8 होते हैं।

19. अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद होते हैं ?

- (A) दो
- (B) आठ
- (C) चार
- (D) पाँच

Correct Answer: (B) आठ

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिन्दी व्याकरण में वाक्यों के वर्गीकरण से संबंधित है। वाक्यों को दो आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है : रचना के आधार पर और अर्थ के आधार पर।

Step 2: Detailed Explanation:

अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं। ये भेद वाक्य से प्रकट होने वाले अर्थ (जैसे- प्रश्न, आज्ञा, इच्छा) पर आधारित होते हैं।

ये आठ भेद हैं:

1. विधानवाचक (Assertive)
2. निषेधवाचक (Negative)
3. प्रश्नवाचक (Interrogative)
4. आज्ञावाचक (Imperative)
5. इच्छावाचक (Optative)
6. संदेहवाचक (Skeptical)
7. विस्मयादिवाचक (Exclamatory)
8. संकेतवाचक (Conditional)

Step 3: Final Answer:

अतः, अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं।

Quick Tip

ध्यान रखें: अर्थ के आधार पर आठ भेद होते हैं, जबकि रचना के आधार पर तीन भेद (सरल, संयुक्त, मिश्र) होते हैं। प्रश्न को ध्यान से पढ़ें कि किस आधार पर भेद पूछा गया है।

20. 'आदर्श से गाया नहीं जाता।' इसमें कौन-सा वाच्य होगा ?

- (A) कर्तृवाच्य
- (B) कर्मवाच्य
- (C) भाववाच्य
- (D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (C) भाववाच्य

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न हिन्दी व्याकरण के 'वाच्य' (Voice) से संबंधित है। वाच्य से यह पता चलता है कि क्रिया

का मुख्य विषय कर्ता, कर्म, या भाव में से कौन है।

Step 2: Detailed Explanation:

वाच्य के तीन भेद होते हैं:

1. **कर्तृवाच्य (Active Voice):** क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। (जैसे- आदर्श गाता है।)
2. **कर्मवाच्य (Passive Voice):** क्रिया कर्म के अनुसार होती है। (जैसे- आदर्श द्वारा गीत गाया जाता है।)
3. **भाववाच्य (Impersonal Voice):** क्रिया कर्ता या कर्म के अनुसार न होकर भाव के अनुसार होती है। इसकी पहचान है :
 - कर्ता के साथ 'से' या 'द्वारा' लगा होता है।
 - क्रिया अकर्मक होती है।
 - क्रिया हमेशा पुल्लिङ्ग, एकवचन और अन्य पुरुष में रहती है।
 - प्रायः असमर्थता का बोध होता है।दिए गए वाक्य 'आदर्श से गाया नहीं जाता' में ये सभी लक्षण मौजूद हैं। यहाँ क्रिया 'गाना' अकर्मक रूप में प्रयुक्त है और असमर्थता का भाव है।

Step 3: Final Answer:

अतः, इस वाक्य में भाववाच्य है।

Quick Tip

भाववाच्य को पहचानने का सरल तरीका है : (कर्ता + 'से') + (क्रिया का अकर्मक रूप) + (नहीं/असमर्थता का भाव)। जैसे - "मुझसे चला नहीं जाता", "पक्षी से उड़ा नहीं जाता"।

1. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

हमलोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप का चाहे, उस रूप का करे-चाहे राक्षस बनावे, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं; क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवा पुरुषों को प्रायः बहुत कम रहता है।

1(i). उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Correct Answer: प्रस्तुत गद्यांश आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित निबन्ध 'मित्त्रता' से उद्धृत है। यह हमारी पाठ्य-पुस्तक के गद्य-खण्ड में संकलित है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

सन्दर्भ लिखने के लिए हमें पाठ का नाम और उसके लेखक का नाम बताना होता है।

Step 2: Detailed Explanation:

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के गद्य-खण्ड में संकलित तथा हिन्दी के प्रसिद्ध निबन्धकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित निबन्ध 'मित्रता' से लिया गया है। इस अंश में लेखक बता रहे हैं कि युवावस्था में संगति का हमारे आचरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है और हमें मित्र बनाते समय बहुत सावधानी बरतनी चाहिए।

Step 3: Final Answer:

अतः, इस गद्यांश का सन्दर्भ 'मित्रता' पाठ से है, जिसके लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हैं।

Quick Tip

सन्दर्भ लिखते समय दो महत्वपूर्ण बातें अवश्य लिखें - पाठ का नाम और लेखक का नाम। इन्हें काले पेन से या रेखांकित करके लिखने से उत्तर अधिक प्रभावशाली लगता है।

1(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: लेखक के अनुसार, हमें उन लोगों की संगति से बचना चाहिए जो हमसे अधिक मजबूत इच्छा-शक्ति वाले हों, क्योंकि उनके प्रभाव में हम अपनी बुद्धि और विवेक का प्रयोग किए बिना उनकी हर बात मानने लगते हैं, जिससे हमारा बौद्धिक विकास रुक जाता है और हमारा व्यक्तित्व दब जाता है।

Solution:**Step 1: Understanding the Concept:**

रेखांकित अंश की व्याख्या में, हमें लेखक के विचारों को अपने शब्दों में स्पष्ट करना होता है। रेखांकित अंश है: "ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है।"

Step 2: Detailed Explanation:

लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी कहते हैं कि युवावस्था में हमारा मन कच्ची मिट्टी के समान कोमल और लचीला होता है, जिस पर किसी भी बात का प्रभाव बहुत जल्दी पड़ता है। इस अवस्था में हमें ऐसे लोगों की मित्रता नहीं करनी चाहिए जो हमसे अधिक मजबूत इच्छा-शक्ति और दृढ़ संकल्प वाले हों। इसका कारण यह है कि ऐसे मित्रों के सामने हम कमजोर पड़ जाते हैं और उनकी इच्छा-शक्ति के दबाव में आकर हम उनकी हर सही-गलत बात को बिना सोचे-समझे और बिना कोई विरोध किए स्वीकार कर लेते हैं। इससे हमारी अपनी सोचने-समझने की शक्ति का विकास नहीं हो पाता, हमारी बुद्धि कुंठित हो जाती है और हमारे व्यक्तित्व का स्वतंत्र विकास रुक जाता है। हम केवल उनके अनुयायी बनकर रह जाते हैं।

Step 3: Final Answer:

अतः, लेखक हमें ऐसे लोगों से दूर रहने की सलाह देते हैं जो अपनी दृढ़ इच्छा-शक्ति से हमारे व्यक्तित्व को दबा दें और हमें अपनी बुद्धि का प्रयोग करने से रोकें।

Quick Tip

व्याख्या करते समय, केवल शाब्दिक अर्थ न लिखें। उस अंश में छिपे हुए भाव और लेखक के उद्देश्य को अपने शब्दों में विस्तार से समझाएँ।

1(iii). किन लोगों का संगत करना हमारे लिए बुरा है ?

Correct Answer: लेखक के अनुसार, दो प्रकार के लोगों की संगति हमारे लिए बुरी है : (1) वे जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प वाले हों, और (2) वे जो हमारी ही बात को सर्वोपरि रखते हों।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न का उत्तर सीधे गद्यांश में दिया गया है। हमें गद्यांश को पढ़कर उन दो प्रकार के लोगों की पहचान करनी है जिनकी संगति को लेखक ने बुरा बताया है।

Step 2: Detailed Explanation:

गद्यांश के अनुसार, हमारे लिए निम्नलिखित दो प्रकार के लोगों का साथ करना बुरा है :

1. हमसे अधिक दृढ़ संकल्प वाले लोग : लेखक कहते हैं, "ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर एक बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है।" ऐसे लोग हम पर हावी हो जाते हैं और हम अपना व्यक्तित्व खो देते हैं।
2. हमारी ही बात को ऊपर रखने वाले लोग : लेखक कहते हैं, "पर ऐसे लोगों का साथ करना और बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं; क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई दबाव रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है।" ऐसे लोग हमें सही-गलत का बोध नहीं कराते और हम दिशाहीन हो सकते हैं।

Step 3: Final Answer:

अतः, जो लोग हम पर अत्यधिक प्रभाव डालते हैं या जो लोग हमारा बिल्कुल भी विरोध नहीं करते, दोनों ही प्रकार के लोगों की संगति हमारे लिए हानिकारक है।

Quick Tip

गद्यांश आधारित प्रश्नों का उत्तर देते समय, सीधे गद्यांश की पंक्तियों को उद्धृत करने के बजाय, उन्हें समझकर अपने शब्दों में लिखें।

अथवा

अभी चंद्रमा के लिए अनेक उड़ानें होंगी । दूसरे ग्रहों के लिए मानवरहित यान छोड़े जा रहे हैं । अंतरिक्ष में परिक्रमा करनेवाला स्टेशन स्थापित करने की दिशा में तेजी से प्रयत्न किये जा रहे हैं । ऐसा स्टेशन बन जाने पर ब्रह्माण्ड के रहस्यों की पर्तें खोलने में काफी सहायता मिलेगी । यह पृथ्वी मानव के लिए पालने के समान है । वह हमेशा-हमेशा के लिए इसकी परिधि में बँधा हुआ नहीं रह सकता । अज्ञात की खोज में वह कहाँ तक पहुँचेगा, कौन कह सकता है ?

1(i). उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

Correct Answer: प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के गद्य-खण्ड में संकलित 'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी' नामक पाठ से लिया गया है । इसके लेखक श्री जयप्रकाश भारती हैं ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

सन्दर्भ लिखने के लिए हमें पाठ का नाम और उसके लेखक का नाम बताना होता है ।

Step 2: Detailed Explanation:

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के गद्य-खण्ड में संकलित श्री जयप्रकाश भारती द्वारा लिखित निबन्ध 'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी' से उद्धृत है । इस अंश में लेखक ने मनुष्य की अंतरिक्ष अन्वेषण की महत्वाकांक्षा और भविष्य की संभावनाओं का वर्णन किया है ।

Step 3: Final Answer:

अतः, इस गद्यांश का सन्दर्भ 'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी' पाठ से है, जिसके लेखक श्री जयप्रकाश भारती हैं ।

Quick Tip

सन्दर्भ में पाठ और लेखक के नाम के साथ-साथ गद्यांश का संक्षिप्त प्रसंग (कि इसमें क्या बताया गया है) भी लिख सकते हैं, जिससे उत्तर और भी अच्छा हो जाता है ।

1(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

Correct Answer: लेखक कहते हैं कि पृथ्वी ने मानव जाति का पालन-पोषण एक पालने की तरह किया है, लेकिन मनुष्य अपनी ज्ञान की प्र्यास और खोजी प्रवृत्ति के कारण हमेशा के लिए पृथ्वी की सीमाओं में बंधकर नहीं रह सकता ; वह ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने के लिए निरंतर आगे बढ़ता रहेगा ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

रेखांकित अंश की व्याख्या में, हमें लेखक के विचारों को अपने शब्दों में स्पष्ट करना होता है । रेखांकित

अंश है : "यह पृथ्वी मानव के लिए पालने के समान है। वह हमेशा-हमेशा के लिए इसकी परिधि में बँधा हुआ नहीं रह सकता।"

Step 2: Detailed Explanation:

लेखक श्री जयप्रकाश भारती जी मनुष्य की असीम जिज्ञासा और प्रगति करने की इच्छा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार एक शिशु का विकास और पालन-पोषण पालने में होता है, उसी प्रकार मानव सभ्यता का विकास और पालन-पोषण पृथ्वी पर हुआ है। पृथ्वी ने हमें जीवन के लिए सभी आवश्यक वस्तुएँ दी हैं।

परन्तु, जैसे एक बच्चा बड़ा होकर पालने को छोड़ देता है, उसी प्रकार बौद्धिक रूप से विकसित हो चुका मनुष्य भी अपनी ज्ञान-पिपासा को शांत करने के लिए हमेशा पृथ्वी की सीमाओं में कैद होकर नहीं रह सकता। उसकी खोजी प्रवृत्ति उसे ब्रह्मांड के अनजाने रहस्यों को जानने के लिए प्रेरित करती है, और इसी प्रेरणा के कारण वह अंतरिक्ष में नए-नए आयाम स्थापित करेगा।

Step 3: Final Answer:

अतः, लेखक का आशय यह है कि पृथ्वी हमारा आरंभिक घर है, लेकिन हमारा अंतिम लक्ष्य सम्पूर्ण ब्रह्मांड की खोज करना है, और मनुष्य इस दिशा में आगे बढ़ता ही रहेगा।

Quick Tip

व्याख्या में आए रूपकों और उपमाओं (जैसे 'पृथ्वी पालने के समान है') को स्पष्ट करना बहुत महत्वपूर्ण होता है। इससे आपके उत्तर की गहराई का पता चलता है।

1(iii). अंतरिक्ष में स्टेशन बन जाने से किसमें सहायता मिलेगी ?

Correct Answer: गद्यांश के अनुसार, अंतरिक्ष में स्टेशन बन जाने से ब्रह्मांड के रहस्यों की परतों को खोलने में काफी सहायता मिलेगी।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न का उत्तर सीधे गद्यांश में दिया गया है। हमें गद्यांश को पढ़कर यह बताना है कि अंतरिक्ष स्टेशन की स्थापना का क्या लाभ होगा।

Step 2: Detailed Explanation:

गद्यांश की चौथी पंक्ति में स्पष्ट रूप से लिखा है :

"ऐसा स्टेशन बन जाने पर ब्रह्माण्ड के रहस्यों की परतें खोलने में काफी सहायता मिलेगी।"

इसका अर्थ है कि अंतरिक्ष में एक स्थायी स्टेशन स्थापित हो जाने से वैज्ञानिकों को ब्रह्मांड का अध्ययन करने, नए ग्रहों, तारों और आकाशगंगाओं की खोज करने तथा सृष्टि के अनसुलझे रहस्यों को समझने में बहुत आसानी होगी।

Step 3: Final Answer:

अतः, अंतरिक्ष में स्टेशन बन जाने से ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागर करने में सहायता मिलेगी।

Quick Tip

जब प्रश्न का उत्तर पद्यांश में सीधे तौर पर दिया गया हो, तो सुनिश्चित करें कि आप मुख्य बिंदुओं को अपने उत्तर में शामिल कर रहे हैं। यहाँ मुख्य बिंदु 'ब्रह्मांड के रहस्यों को खोलना' है।

2. निम्नलिखित पद्यांश पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे ।
 सकल भुवन अपने बस कीन्हे ॥
 देबि तजिअ संसउ अस जानी ।
 भंजब धनुषु राम सुनु रानी ॥
 सखी बचन सुनि भै परतीती ।
 मिटा बिषादु बढी अति प्रीती ॥
 तब रामहि बिलोकि बैदेही ।
 सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही ॥
 मनहीं मन मनाव अकुलानी ।
 होहु प्रसन्न महेस भवानी ॥
 करहु सफल आपनि सेवकाई ।
 करि हितु हरहु चाप गरुआई ॥
 गननायक बरदायक देवा ।
 आज लगे कीन्हिउँ तुअ सेवा ॥
 बार-बार विनती सुनि मोरी ।
 करहु चाप गुरुता अति थोरी ॥

2(i). उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक एवं कवि का नाम लिखिए ।

Correct Answer: प्रस्तुत पद्यांश का शीर्षक 'धनुष-भंग' है और इसके रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

Solution:**Step 1: Understanding the Concept:**

इस प्रश्न में दिए गए पद्य खंड का शीर्षक और उसके कवि की पहचान करनी है।

Step 2: Detailed Explanation:

प्रस्तुत पद्यांश गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य 'श्रीरामचरितमानस' के 'बालकाण्ड' से लिया गया है। हमारी पाठ्य-पुस्तक में यह अंश 'धनुष-भंग' शीर्षक के अंतर्गत संकलित है। इसमें

कवि ने सीता स्वयंवर के समय शिव-धनुष को तोड़ने से पूर्व सीता जी की मनोदशा का सुंदर चित्रण किया है।

Step 3: Final Answer:

अतः, इस पद्यांश के कवि गोस्वामी तुलसीदास और शीर्षक 'धनुष-भंग' है।

Quick Tip

'श्रीरामचरितमानस' के प्रसंगों को पहचानने के लिए 'राम', 'बैदेही' (सीता), 'महेश भवानी' (शिव-पार्वती) जैसे पात्रों के नामों पर ध्यान दें। इसकी भाषा अवधी है।

2(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Correct Answer: श्रीराम को धनुष की ओर बढ़ते देख सीता जी मन ही मन व्याकुल होकर शिव-पार्वती से प्रार्थना करती हैं कि हे महेश-भवानी! मुझ पर प्रसन्न होइए और मैंने जो आपकी सेवा की है, उसे सफल कीजिए। मेरा हित करके इस धनुष के भारीपन को हर लीजिये अर्थात् इसे हल्का कर दीजिए।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

रेखांकित अंश की व्याख्या में, हमें कवि द्वारा कही गई बात को अपने शब्दों में स्पष्ट करना होता है। रेखांकित अंश है: "मनहीं मन मनाव अकुलानी । होहु प्रसन्न महेश भवानी ।। करहु सफल आपनि सेवकाई । करि हितु हरहु चाप गरुआई ।।"

Step 2: Detailed Explanation:

कवि गोस्वामी तुलसीदास जी सीता जी की मानसिक स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जब श्रीरामचंद्र जी शिव जी के धनुष को तोड़ने के लिए आगे बढ़ते हैं, तो सीता जी उन्हें देखकर मन में बहुत व्याकुल हो उठती हैं। वे मन-ही-मन देवताओं को मनाने लगती हैं।

वे भगवान शिव (महेश) और माता पार्वती (भवानी) से प्रार्थना करती हैं, "हे शिव-पार्वती! आप दोनों मुझ पर प्रसन्न हों। मैंने आज तक आपकी जो भी भक्ति और सेवा की है, उसे सफल करें। कृपा करके मेरा हित कीजिए और इस शिव-धनुष के भारीपन को कम कर दीजिए, जिससे श्रीराम इसे सरलता से तोड़ सकें।" सीता जी की इस प्रार्थना में उनकी व्याकुलता, श्रीराम के प्रति उनका प्रेम और देवताओं में उनकी आस्था प्रकट होती है।

Step 3: Final Answer:

अतः, इन पंक्तियों में सीता जी अपनी भक्ति का वास्ता देकर शिव-पार्वती से धनुष को हल्का करने की व्याकुलतापूर्ण प्रार्थना कर रही हैं ताकि श्रीराम अपने कार्य में सफल हों।

Quick Tip

काव्यांश की व्याख्या करते समय, काव्यांश में निहित भावों (जैसे यहाँ व्याकुलता, प्रेम, भक्ति) को उजागर करना महत्वपूर्ण है। केवल शाब्दिक अर्थ लिखने से बचें।

2(iii). पद्यांश में सीताजी का सशंकित मन श्रीराम से विवाह के लिए देवताओं से किस प्रकार विनती कर रहा है ?

Correct Answer: पद्यांश में सीताजी का सशंकित मन श्रीराम से विवाह हेतु शिव-पार्वती तथा गणेश जी से बार-बार विनती कर रहा है कि वे धनुष के भारीपन को बहुत कम कर दें ताकि श्रीराम उसे तोड़ सकें।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न में यह पूछा गया है कि सीता जी का डरा हुआ मन (सशंकित मन) देवताओं से क्या और कैसे प्रार्थना कर रहा है। इसका उत्तर पूरे पद्यांश के भाव में निहित है।

Step 2: Detailed Explanation:

श्रीराम को धनुष तोड़ते देखने की आशंका से सीता जी का मन भयभीत और शंकाग्रस्त है। वे श्रीराम से अपने विवाह की कामना को सफल बनाने के लिए देवताओं से निम्नलिखित प्रकार से विनती कर रही हैं:

1. वे व्याकुल होकर मन-ही-मन भगवान शिव और माता पार्वती को मनाती हैं और अपनी सेवा का पुण्य स्मरण दिलाकर उनसे धनुष का भारीपन कम करने की प्रार्थना करती हैं।
2. वे वरदान देने वाले देवता, श्री गणेश जी से भी प्रार्थना करती हैं कि मैंने आज तक आपकी जो सेवा की है, उसके बदले में आप मेरी विनती सुनें और धनुष के भारीपन को बहुत थोड़ा कर दें ("करहु चाप गुरुता अति थोरी")।

उनकी विनती में व्याकुलता, दीनता और भक्ति का भाव है। वे बार-बार ("बार-बार विनती") यही प्रार्थना दोहरा रही हैं कि धनुष हल्का हो जाए।

Step 3: Final Answer:

अतः, सीता जी का सशंकित मन अपनी भक्ति और सेवा का वास्ता देकर शिव-पार्वती और गणेश जी से बार-बार धनुष को हल्का करने की प्रार्थना कर रहा है ताकि श्रीराम से उनके विवाह की शर्त पूरी हो सके।

Quick Tip

किसी पात्र की मनोदशा पर आधारित प्रश्नों का उत्तर देते समय, पद्यांश में उन शब्दों और पंक्तियों को खोजें जो सीधे उस भाव (जैसे यहाँ 'अकुलानी', 'सभय हृदय', 'बार-बार विनती') को व्यक्त करते हों।

अथवा
इससे भी सुंदर समाधियाँ,
हम जग में हैं पाते ।
उनकी गाथा पर निशीथ में,
क्षुद्र जंतु ही गाते ॥
पर कवियों की अमर गिरा में,
इसकी अमिट कहानी ।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है, वीरों की बानी ॥

2(i). उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए ।

Correct Answer: प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के काव्य-खण्ड में संकलित 'झाँसी की रानी की समाधि पर' नामक कविता से उद्धृत है। इसकी रचयिता कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

संदर्भ लिखने के लिए हमें कविता का शीर्षक और उसके कवि/कवयित्री का नाम बताना होता है।

Step 2: Detailed Explanation:

प्रस्तुत पद्यांश वीर-रस की प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित कविता 'झाँसी की रानी की समाधि पर' से लिया गया है। यह कविता उनके काव्य-संग्रह 'मुकुल' में संग्रहीत है। इन पंक्तियों में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की साधारण सी समाधि की महिमा का गान करते हुए उसे संसार की भव्य समाधियों से भी श्रेष्ठ बताया है।

Step 3: Final Answer:

अतः, इस पद्यांश की कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान और शीर्षक 'झाँसी की रानी की समाधि पर' है।

Quick Tip

संदर्भ को और प्रभावशाली बनाने के लिए, आप कविता की मूल भावना (जैसे यहाँ- वीर रस, देशभक्ति) का भी एक पंक्ति में उल्लेख कर सकते हैं।

2(ii). रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

Correct Answer: कवयित्री कहती हैं कि संसार में झाँसी की रानी की समाधि से भी अधिक सुंदर और भव्य समाधियाँ मिल जाती हैं, परन्तु उन पर रात के सन्नाटे में केवल झींगुर और कीड़े-मकोड़े जैसे

तुच्छ जीव ही अपनी आवाज़ करते हैं, अर्थात् समय के साथ उनकी कहानियाँ भुला दी जाती हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

रेखांकित अंश की व्याख्या में, हमें कवयित्री द्वारा कही गई बात को अपने शब्दों में स्पष्ट करना होता है। रेखांकित अंश है : "इससे भी सुंदर समाधियाँ, हम जग में हैं पाते। उनकी गाथा पर निशीथ में, क्षुद्र जंतु ही गाते।।"

Step 2: Detailed Explanation:

कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान जी रानी लक्ष्मीबाई की साधारण समाधि की महानता बताते हुए कहती हैं कि यद्यपि इस संसार में हमें रानी की इस समाधि से भी अधिक कलात्मक और भव्य समाधियाँ देखने को मिल सकती हैं, जो राजाओं-महाराजाओं की हुआ करती हैं। परन्तु उन भव्य समाधियों में वह गौरव और प्रेरणा नहीं है।

उनकी कहानियों को अब कोई याद नहीं करता। उनकी गाथाएँ समय के साथ भुला दी गई हैं। अब तो केवल रात के घने अँधेरे और सन्नाटे में झींगुर और कीड़े-मकोड़े जैसे तुच्छ जीव ही अपनी आवाज़ में मानो उनकी कहानी गाते हैं। कवयित्री का आशय यह है कि भौतिक सुंदरता और भव्यता सच्ची कीर्ति का प्रतीक नहीं होती। सच्ची कीर्ति त्याग और बलिदान से मिलती है।

Step 3: Final Answer:

अतः, इन पंक्तियों में कवयित्री ने भव्य किन्तु कीर्तिहीन समाधियों की निरर्थकता और रानी की साधारण समाधि की महानता के बीच का अंतर स्पष्ट किया है।

Quick Tip

व्याख्या करते समय प्रतीकात्मक अर्थ को स्पष्ट करना आवश्यक है। यहाँ 'क्षुद्र जंतु का गाना' इस बात का प्रतीक है कि उन समाधियों की गाथा को अब कोई मनुष्य याद नहीं करता और वे विस्मृत हो चुकी हैं।

2(iii). 'निशीथ' एवं 'गिरा' शब्द के अर्थ लिखिए।

Correct Answer: 'निशीथ' का अर्थ है - मध्यरात्रि (आधी रात)।

'गिरा' का अर्थ है - वाणी या आवाज़।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न में दिए गए दो शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना है।

Step 2: Detailed Explanation:

1. निशीथ : यह एक तत्सम शब्द है। इसका अर्थ होता है मध्यरात्रि या आधी रात का समय। कविता में इसका प्रयोग रात के घने अँधेरे और सन्नाटे को दर्शाने के लिए किया गया है।
2. गिरा : यह भी एक तत्सम शब्द है। इसका अर्थ होता है वाणी, बोली या आवाज। कविता में 'कवियों की अमर गिरा' का अर्थ है 'कवियों की अमर वाणी' या 'कवियों के अमर शब्द'।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'निशीथ' का अर्थ मध्यरात्रि और 'गिरा' का अर्थ वाणी है।

Quick Tip

शब्दार्थ के प्रश्नों के लिए अपनी पाठ्य-पुस्तक में दिए गए शब्द-कोष को नियमित रूप से पढ़ें। इससे आपका शब्द-भंडार मजबूत होगा।

3. निम्नलिखित संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

गद्यांश (क)

अस्माकं संस्कृतिः सदा गतिशीला वर्तते। मानवजीवनं संस्कर्तुम् एषा यथासमयं नवां नवां विचारधारां स्वीकरोति, नवां शक्तिं च प्राप्नोति। अत्र दुराग्रहः नास्ति, यत् युक्तियुक्तं कल्याणकारि च तदत्र सहर्षं गृहीतं भवति। एतस्याः गतिशीलतायाः रहस्यं मानव-जीवनस्य शाश्वतमूल्येषु निहितम्, तद् यथा सत्यस्य प्रतिष्ठा, सर्वभूतेषु समभावः विचारेषु औदार्यम्, आचारे दृढता चेति।

Solution:

Step 1: सन्दर्भ

प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के संस्कृत-खण्ड में संकलित 'भारतीय संस्कृतिः' नामक पाठ से उद्धृत है। इस गद्यांश में भारतीय संस्कृति की गतिशीलता और उसके मूल सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला गया है।

Step 2: अनुवाद

हिन्दी अनुवाद :

हमारी संस्कृति सदा गतिशील है। मानव जीवन को शुद्ध करने के लिए यह समय-समय पर नई-नई विचारधारा को स्वीकार करती है और नई शक्ति प्राप्त करती है। इसमें हठधर्मिता नहीं है; जो तर्कसंगत और कल्याणकारी है, वह यहाँ हर्ष के साथ स्वीकार किया जाता है। इसकी गतिशीलता का रहस्य मानव-जीवन के शाश्वत मूल्यों में निहित है, जैसे कि सत्य की प्रतिष्ठा, सभी प्राणियों में समानता का भाव, विचारों में उदारता और आचरण में दृढ़ता।

Quick Tip

अनुवाद करते समय संस्कृत के प्रत्येक शब्द का अर्थ समझकर उसे एक सहज हिन्दी वाक्य में पिरोने का प्रयास करें। शाब्दिक अनुवाद से बचें और भाव को प्रमुखता दें। 'चेति' का अर्थ 'च + इति' = 'और' होता है।

गद्यांश (ख) (अथवा)

(स्थानम्-अलक्षेन्द्रस्य सैन्य शिविरम् । अलक्षेन्द्रः आम्भीकः च आसीनौ वर्तेते । वन्दिनं पुरुराजम् अग्रे कृत्वा एकतः प्रविशति यवन-सेनापतिः ।)

सेनापतिः - विजयतां सम्राट् ।

पुरुराजः - एष भारतवीरोऽपि यवनराजम् अभिवादयते ।

अलक्षेन्द्रः - (साक्षेपम्) अहो ! बन्धनगतः अपि आत्मानं वीर इति मन्यसे पुरुराज ?

पुरुराजः - यवनराज ! सिंहस्तु सिंह एव, वने वा भवतु पञ्जरे वा ।

अलक्षेन्द्रः - किन्तु पञ्जरस्थः सिंहः न किमपि पराक्रमते ।

पुरुराजः - पराक्रमते, यदि अवसरं लभते । अपि च यवनराज !

Solution:

Step 1: सन्दर्भ

प्रस्तुत नाट्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के संस्कृत-खण्ड में संकलित 'वीरः वीरेण पूज्यते' नामक पाठ से उद्धृत है। इसमें सिकन्दर (अलक्षेन्द्र) और पुरुराज (पोरस) के बीच हुए संवाद के माध्यम से पुरुराज की वीरता का प्रदर्शन किया गया है।

Step 2: अनुवाद

हिन्दी अनुवाद :

(स्थान - सिकन्दर का सैनिक शिविर। सिकन्दर और आम्भीक बैठे हुए हैं। बन्दी पुरुराज को आगे करके एक ओर से यवन सेनापति प्रवेश करता है।)

सेनापति - सम्राट् की जय हो।

पुरुराज - यह भारतवीर भी यवनराज का अभिवादन करता है।

सिकन्दर - (आक्षेपपूर्वक) अहो ! बन्धन में पड़े हुए भी तुम स्वयं को वीर मानते हो, पुरुराज ?

पुरुराज - हे यवनराज ! सिंह तो सिंह ही है, चाहे वन में हो या पिंजरे में।

सिकन्दर - किन्तु पिंजरे में बन्द सिंह कुछ भी पराक्रम नहीं करता।

पुरुराज - पराक्रम करता है, यदि अवसर मिलता है। और भी हे यवनराज !

Quick Tip

नाट्यांश का अनुवाद करते समय पात्रों के नाम और कोष्ठक में दी गई क्रियाओं (जैसे - साक्षेपम्) का भी अनुवाद अवश्य करें। इससे संवाद का भाव स्पष्ट होता है।

4. निम्नलिखित संस्कृत श्लोकों में से किसी एक का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

श्लोक (क)

अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः ।

अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः ॥

Solution:

Step 1: सन्दर्भ

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के संस्कृत-खण्ड में संकलित 'प्रबुद्धो ग्रामीणः' नामक पाठ से उद्धृत है। यह एक प्रहेलिका (पहेली) है, जिसमें एक चतुर ग्रामीण एक शहरी नागरिक से पहेली पूछता है।

Step 2: अनुवाद

हिन्दी अनुवाद :

(वह) बिना पैरों का है, परन्तु दूर तक जाता है। साक्षर (अक्षरों से युक्त) है, परन्तु पण्डित (विद्वान) नहीं है। बिना मुख का है, परन्तु स्पष्ट बोलने वाला है। जो उसे जानता है, वह पण्डित है।

उत्तर : पत्र (चिट्ठी)।

Quick Tip

प्रहेलिका (पहेली) वाले श्लोकों का अनुवाद करते समय, उसके उत्तर का भी उल्लेख करना अच्छा रहता है, जैसा कि पाठ के प्रसंग में होता है।

श्लोक (ख) (अथवा)

यथा सौम्यैकेन लोहमणिना सर्वं
लोहमयं विज्ञातं स्याद्वाचारम्भणं
विकारो नामधेयं लोहमित्येव सत्यम् ।

Solution:

नोट : यह श्लोक सामान्यतः हाई स्कूल के पाठ्यक्रम में नहीं पाया जाता। यह छान्दोग्योपनिषद् का एक अंश है। दिए गए प्रश्न-पत्र के अनुसार यह एक संभावित त्रुटि है। फिर भी, इसका सन्दर्भ और अनुवाद नीचे दिया गया है।

Step 1: सन्दर्भ

प्रस्तुत गद्य-मंत्र हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के संस्कृत-खण्ड में संकलित 'आरुणि-श्वेतकेतु-संवाद' (यह पाठ का संभावित नाम है, जो छान्दोग्योपनिषद् पर आधारित हो सकता है) से लिया गया है। इसमें पिता आरुणि अपने पुत्र श्वेतकेतु को ब्रह्म-ज्ञान का उपदेश दे रहे हैं।

Step 2: अनुवाद

हिन्दी अनुवाद :

हे सौम्य ! जैसे एक ही लोहमणि (सोने के कण) से समस्त स्वर्णमय (वस्तुएँ) ज्ञात हो जाती हैं, (क्योंकि) वाणी का आश्रय लेकर उत्पन्न होने वाले सभी विकार (जैसे कंगन, कुण्डल आदि) केवल नाम मात्र हैं, सत्य तो केवल सोना ही है।

भावार्थ: जिस प्रकार एक ही तत्व सोने को जान लेने से सोने से बनी सभी वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है क्योंकि वे सभी नाम और रूप मात्र हैं, मूल सत्य तो सोना ही है ; उसी प्रकार एक ब्रह्म-तत्व को जान लेने से सम्पूर्ण जगत का ज्ञान हो जाता है क्योंकि यह सम्पूर्ण जगत उसी ब्रह्म का विकार और नाम-रूप मात्र है, मूल सत्य तो ब्रह्म ही है।

Quick Tip

दार्शनिक और उपनिषद् के अंशों का अनुवाद करते समय, केवल शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ उसका भावार्थ या दार्शनिक तात्पर्य भी स्पष्ट करने से उत्तर अधिक पूर्ण और प्रभावशाली बनता है।

5(क)(i). 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के आधार पर 'गाँधी जी' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य में महात्मा गाँधी को नायक के रूप में चित्रित किया गया है, जो एक अलौकिक दिव्य पुरुष, महान देशभक्त, हरिजनों के उद्धारक और सत्य, अहिंसा के पुजारी हैं। उनका चरित्र भारत को मुक्ति दिलाने वाले दूत का है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

चरित्र-चित्रण का अर्थ है किसी पात्र के व्यक्तित्व, गुण, दोष, और स्वभाव की विशेषताओं का साहित्यिक वर्णन करना। 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य में कवि डॉ० राजेन्द्र मिश्र ने महात्मा गाँधी के चरित्र को नायक के रूप में प्रस्तुत किया है।

Step 3: Detailed Explanation:

'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गाँधी के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **अलौकिक दिव्य पुरुष :** कवि ने गाँधीजी को एक साधारण पुरुष न मानकर ईश्वर का अवतार माना है, जो भारत भूमि को अंग्रेजों के अत्याचारों से मुक्त कराने के लिए जन्मे हैं। उनकी तुलना राम, कृष्ण, बुद्ध, और ईसा मसीह जैसे महापुरुषों से की गई है।
- **महान देशभक्त :** गाँधीजी ने अपना पूरा जीवन देश की स्वतंत्रता और जनता की सेवा में समर्पित कर दिया। देशवासियों की दुर्दशा देखकर उनका हृदय द्रवित हो जाता था और उन्होंने देश सेवा का प्रण अंतिम सांस तक निभाया।
- **हरिजनोद्धारक :** गाँधीजी दलितों और असहायों के सच्चे हितैषी थे। वे छुआछूत जैसी सामाजिक कुरीति के प्रबल विरोधी थे और सभी को ईश्वर की संतान मानते थे। उन्होंने साबरमती आश्रम में हरिजनों को स्थान दिया और उनके उद्धार के लिए दृढ़ संकल्पित रहे।
- **सत्य और अहिंसा के पुजारी :** सत्य और अहिंसा गाँधीजी के दो सबसे बड़े शस्त्र थे। उन्होंने इन्हीं सिद्धांतों के बल पर ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी और भारत को स्वतंत्रता दिलाई।
- **दृढ़ निश्चयी :** गाँधीजी अपने निश्चय के पक्के थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के मार्ग में अनेक कष्ट सहे, जेल यात्राएँ कीं, परंतु उनका मनोबल कभी नहीं टूटा।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य में गाँधीजी को एक लोकोत्तर महापुरुष, महान देशभक्त, दलितों के उद्धारक, मानवीय गुणों से परिपूर्ण और दृढ़ निश्चयी व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया गया है, जिन्होंने अपने अहिंसक प्रयासों से भारत को मुक्ति दिलाई।

Quick Tip

उत्तर लिखते समय, चरित्र की विशेषताओं को शीर्षकों (जैसे- महान देशभक्त, हरिजनोद्धारक) में बाँटकर लिखें। प्रत्येक शीर्षक के समर्थन में काव्य से कोई उदाहरण या प्रसंग देने से उत्तर अधिक प्रभावशाली बनता है।

5(क)(ii). 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग में 'नमक कानून तोड़ो' आंदोलन का वर्णन है। इसमें गाँधीजी द्वारा दांडी यात्रा का संकल्प लेना, अंग्रेजों द्वारा इसका उपहास उड़ाया जाना और फिर गाँधीजी के दृढ़ निश्चय के साथ हजारों देशवासियों का उनके पीछे चलना और दांडी पहुँचकर नमक कानून को भंग करना प्रमुख घटनाएँ हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

कथानक का अर्थ किसी काव्य या कहानी की घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन होता है। इस प्रश्न में 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के पाँचवें सर्ग की प्रमुख घटनाओं को सारांश रूप में प्रस्तुत करना है।

Step 3: Detailed Explanation:

'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के पंचम सर्ग का कथानक इस प्रकार है :

- **आंदोलन की पृष्ठभूमि :** इस सर्ग का आरम्भ गाँधीजी के उस चिंतन से होता है जिसमें वे सोचते हैं कि अंग्रेजों ने भारत के नमक जैसे प्राकृतिक संसाधन पर भी कर लगाकर अन्याय किया है। वे इस अन्यायपूर्ण कानून को तोड़ने का निश्चय करते हैं।
- **दांडी यात्रा का संकल्प :** गाँधीजी साबरमती आश्रम से दांडी तक की पदयात्रा करके नमक कानून को भंग करने का संकल्प लेते हैं। अंग्रेजी शासक और अधिकारी उनके इस संकल्प और बूढ़े शरीर को देखकर उनका उपहास उड़ाते हैं।
- **यात्रा का आरम्भ :** अंग्रेजों के उपहास की चिंता किए बिना गाँधीजी अपने दृढ़ निश्चय के साथ यात्रा आरम्भ करते हैं। शुरुआत में उनके साथ कुछ ही अनुयायी होते हैं, लेकिन जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते हैं, हजारों की संख्या में स्त्री-पुरुष और युवा उनके साथ जुड़ते जाते हैं।
- **यात्रा का प्रभाव :** गाँधीजी की दांडी यात्रा एक जन-आंदोलन का रूप ले लेती है। पूरा देश देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हो जाता है।
- **नमक कानून का भंग होना :** अंत में, गाँधीजी दांडी पहुँचकर समुद्र के जल से नमक बनाते हैं और इस प्रकार अंग्रेजी सरकार के अन्यायपूर्ण 'नमक कानून' को भंग कर देते हैं। यह घटना पूरे देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत का प्रतीक बनती है।

Step 4: Final Answer:

इस प्रकार, पंचम सर्ग में गाँधीजी के नेतृत्व में ऐतिहासिक दांडी मार्च और नमक कानून को तोड़ने की

घटना का सजीव और प्रेरणादायक वर्णन किया गया है, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा प्रदान की।

Quick Tip

किसी सर्ग का कथानक लिखते समय, घटनाओं को क्रम से लिखें। सर्ग की शुरुआत, मध्य और अंत की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख अवश्य करें। महत्वपूर्ण घटनाओं को रेखांकित करने से परीक्षक का ध्यान आकर्षित होता है।

5(ख)(i). 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर उसके प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक और प्रमुख पात्र पंडित जवाहरलाल नेहरू हैं। उन्हें एक अलौकिक पुरुष, वीर देशभक्त, गाँधीजी के सच्चे अनुयायी, सर्वप्रिय लोकनायक और भारतीय संस्कृति के पोषक के रूप में चित्रित किया गया है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

चरित्र-चित्रण का अर्थ है किसी पात्र के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताओं का साहित्यिक वर्णन करना। 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य में पंडित जवाहरलाल नेहरू के विराट व्यक्तित्व को भारत की विभिन्न सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विशेषताओं के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

Step 3: Detailed Explanation:

'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर नायक पंडित जवाहरलाल नेहरू के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **अलौकिक एवं विराट व्यक्तित्व :** कवि ने नेहरूजी को एक अलौकिक पुरुष के रूप में चित्रित किया है, जिनके व्यक्तित्व का निर्माण सूर्य के तेज, चंद्रमा की सुंदरता, हिमालय के स्वाभिमान और सागर की गंभीरता जैसे दिव्य तत्वों से हुआ है।
- **वीर देशभक्त और स्वतंत्रता-प्रेमी :** नेहरूजी एक उच्च कुल में जन्म लेकर भी देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते रहे और अनेक कष्ट सहे। वे एक वीर योद्धा की तरह थे, जो शत्रु के सामने झुकना नहीं जानते थे।
- **गाँधीजी से प्रभावित :** पं० नेहरू, महात्मा गाँधी के सच्चे शिष्य और अनुयायी थे। उन्होंने गाँधीजी से सत्य, अहिंसा, करुणा और मानव-प्रेम का आशीर्वाद प्राप्त किया था और उन्हीं के दिखाए मार्ग पर चलकर देश सेवा की।
- **सर्वप्रिय लोकनायक :** कवि ने नेहरूजी को 'युगावतार' और 'लोकनायक' कहा है। भारतीय जनता उन्हें असीम प्रेम करती थी। उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि भारत के हर प्रांत के लोग उनमें अपनापन महसूस करते थे।
- **समन्वयकारी एवं भारतीय संस्कृति के पोषक :** उनके व्यक्तित्व में भारत के सभी धर्मों, संस्कृतियों और दर्शनों का अद्भुत संगम दिखाई देता है। उनमें अशोक की युद्ध-विरक्ति, बुद्ध की करुणा और प्रताप का स्वाभिमान एक साथ देखने को मिलता है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'ज्योति जवाहर' में पं० जवाहरलाल नेहरू को एक ऐसे महानायक के रूप में चित्रित किया गया है जिनका व्यक्तित्व विराट, प्रेरणादायक और सम्पूर्ण भारत की एकता का प्रतीक है।

Quick Tip

उत्तर लिखते समय, प्रमुख पात्र के गुणों को अलग-अलग बिंदुओं में प्रस्तुत करें। कवि ने पात्र के लिए किन उपमाओं और प्रतीकों का प्रयोग किया है, उनका उल्लेख करने से उत्तर अधिक प्रभावी होता है।

5(ख)(ii). 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

'ज्योति जवाहर' खण्डकावे के द्वितीय सर्ग में पंडित नेहरू के विराट व्यक्तित्व का दर्शन होता है। इसमें कवि यह कल्पना करता है कि नेहरू जब दक्षिण भारत की यात्रा पर जाते हैं, तो प्रकृति और ऐतिहासिक स्थान उनका स्वागत करते हैं। सतपुड़ा पर्वत, ताप्ती नदी और अन्य प्राकृतिक तत्व नेहरू जी के व्यक्तित्व की महानता का गुणगान करते हैं और भारत की एकता का संदेश देते हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

कथानक का अर्थ है किसी काव्य-खंड की घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन। 'ज्योति जवाहर' के द्वितीय सर्ग का कथानक प्रतीकात्मक और भावात्मक है, जिसमें प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से नायक के चरित्र को उभारा गया है।

Step 3: Detailed Explanation:

'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग का कथानक इस प्रकार है :

- **नेहरू का व्यक्तित्व दर्शन :** इस सर्ग में कवि ने कल्पना के माध्यम से पं० नेहरू के व्यक्तित्व को भारत की आत्मा के रूप में प्रस्तुत किया है। जब नेहरू दक्षिण भारत की यात्रा पर निकलते हैं, तो भारत के प्राकृतिक और ऐतिहासिक तत्व उनसे संवाद करते हैं।
- **प्रकृति द्वारा स्वागत :** सतपुड़ा पर्वत नेहरूजी को देखकर गर्व का अनुभव करता है और कहता है कि उत्तर और दक्षिण के बीच कोई दूरी नहीं है, दोनों का लगाव अटूट है। नर्मदा और ताप्ती नदियाँ उनकी आरती उतारती हैं।
- **ऐतिहासिक स्थलों का नमन :** अजंता और एलोरा की गुफाएँ अपने मौन में नेहरूजी के प्रति सम्मान व्यक्त करती हैं। ये स्थान भारत की गौरवशाली कला और संस्कृति के प्रतीक हैं और नेहरूजी के व्यक्तित्व में भी वही गौरव झलकता है।
- **राष्ट्रीय एकता का संदेश :** इस सर्ग के माध्यम से कवि यह संदेश देता है कि नेहरू का व्यक्तित्व केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत की एकता, संस्कृति और गौरव का प्रतीक है। प्रकृति के विभिन्न तत्व जैसे पर्वत, नदियाँ और कलाकृतियाँ, सभी उनके व्यक्तित्व में भारत की आत्मा का दर्शन करते हैं।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'ज्योति जवाहर' का द्वितीय सर्ग नेहरूजी की दक्षिण भारत यात्रा के माध्यम से भारत की भावात्मक और राष्ट्रीय एकता को प्रस्तुत करता है, जहाँ प्रकृति और इतिहास स्वयं नायक की महानता का गुणगान करते हैं।

Quick Tip

इस तरह के प्रतीकात्मक कथानक का उत्तर लिखते समय, कवि की कल्पना और उसके पीछे छिपे संदेश (जैसे राष्ट्रीय एकता) को स्पष्ट रूप से समझाएं। किन प्राकृतिक उपादानों का उल्लेख है, यह बताना महत्वपूर्ण है।

5(ग)(i). 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के आधार पर 'भामाशाह' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य में भामाशाह एक महान देशभक्त, दानवीर, विनम्र और महाराणा प्रताप के सच्चे सहयोगी के रूप में चित्रित हैं। वे अपनी सम्पूर्ण संपत्ति देश की रक्षा के लिए समर्पित कर देते हैं और ऐसा करते हुए स्वयं को केवल मातृभूमि का एक सेवक मानते हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

चरित्र-चित्रण में पात्र के गुणों, स्वभाव और उसके कार्यों के महत्व को दर्शाया जाता है। भामाशाह 'मेवाड़ मुकुट' के एक महत्वपूर्ण पात्र हैं, जिनका त्याग काव्य की कथा को एक नया मोड़ देता है।

Step 3: Detailed Explanation:

'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के आधार पर भामाशाह के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **महान देशभक्त :** भामाशाह के हृदय में मेवाड़ की स्वतंत्रता के प्रति अपार प्रेम है। जब वे सुनते हैं कि महाराणा प्रताप संसाधनों के अभाव में मेवाड़ छोड़ने पर विवश हो रहे हैं, तो वे अत्यंत दुखी होते हैं और उनकी सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं।
- **अतुलनीय दानवीर :** भामाशाह अपनी पीढ़ियों द्वारा संचित अपार धन-संपत्ति को बिना किसी संकोच के महाराणा प्रताप के चरणों में समर्पित कर देते हैं, ताकि उस धन से सेना का पुनः संगठन किया जा सके और मेवाड़ की रक्षा हो सके।
- **विनम्र सेवक :** इतना बड़ा त्याग करने के बाद भी भामाशाह में अहंकार का लेशमात्र भी नहीं है। जब राणा प्रताप उनके इस उपकार की प्रशंसा करते हैं, तो वे विनम्रतापूर्वक कहते हैं कि यह धन देश का ही है और देश की सेवा में लगाना तो प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।
- **प्रेरणास्रोत :** भामाशाह का त्याग और निस्वार्थ सेवा केवल राणा प्रताप को ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी देश-सेवा के लिए प्रेरित करती है। उनका चरित्र त्याग और देशभक्ति का प्रतीक बन गया है।

Step 4: Final Answer:

इस प्रकार, 'मेवाड़ मुकुट' में भामाशाह का चरित्र एक आदर्श देशभक्त, अद्वितीय दानवीर और सच्चे राष्ट्र-सेवक का है, जिनके महान त्याग ने मेवाड़ के स्वतंत्रता संग्राम में नई ऊर्जा का संचार किया।

Quick Tip

भामाशाह जैसे ऐतिहासिक पात्रों का चरित्र-चित्रण करते समय उनकी ऐतिहासिक छवि (दानवीर, देशभक्त) को काव्य के संदर्भ में प्रस्तुत करें। उनके संवादों में निहित विनम्रता और त्याग की भावना को उजागर करना उत्तर को प्रभावी बनाता है।

5(ग)(ii). 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :

गंगारत्न पाण्डेय द्वारा रचित 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य की कथावस्तु महाराणा प्रताप के जीवन के एक संघर्षपूर्ण कालखंड पर आधारित है। यह कथा हल्दीघाटी युद्ध में पराजय के बाद अरावली के जंगलों में भटकते महाराणा प्रताप की कठिनाइयों, उनके अंतर्द्वंद्व और अंततः भामाशाह की सहायता से पुनः सैन्य संगठन करके मेवाड़ को मुक्त कराने के संकल्प को दर्शाती है। कथावस्तु सात सर्गों में विभाजित है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

कथावस्तु का अर्थ है किसी काव्य की संपूर्ण कहानी या उसका सार। इसमें काव्य की मुख्य घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य की कथावस्तु सात सर्गों में विभाजित है, जिसका सारांश इस प्रकार है :

- **प्रथम सर्ग (अरावली):** हल्दीघाटी युद्ध में पराजय के बाद महाराणा प्रताप अपने परिवार के साथ अरावली के जंगलों में शरण लेते हैं। वे साधनहीन हैं, पर मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए उनका संकल्प अटूट है।
- **द्वितीय सर्ग (लक्ष्मी):** इस सर्ग में महाराणा प्रताप की पत्नी रानी लक्ष्मी के कष्टों और उनकी मानसिक व्यथा का चित्रण है। वह बच्चों की दयनीय दशा देखकर चिंतित होती है, परन्तु एक वीर क्षत्राणी की भांति धैर्य धारण करती है।
- **तृतीय सर्ग (प्रताप):** इसमें महाराणा प्रताप के आंतरिक संघर्ष का वर्णन है। वे अपने भाई शक्ति सिंह के विश्वासघात से दुखी हैं, पर उनका उत्साह कम नहीं होता। वे मेवाड़ को स्वतंत्र कराने की प्रतिज्ञा करते हैं।
- **चतुर्थ सर्ग (दौलत):** इसमें अकबर के मामा की बेटी दौलत का वर्णन है, जो प्रताप की शरण में है और उनसे पुत्री जैसा स्नेह पाती है। यह प्रताप के उच्च चरित्र को दर्शाता है।
- **पंचम सर्ग (चिंता):** इस सर्ग में प्रताप को एक घास की रोटी भी अपने बच्चे के हाथ से जंगली बिलाव द्वारा छीन लिए जाने की घटना से गहरा आघात लगता है और वे मेवाड़ छोड़ने का कठिन निर्णय लेने पर विवश हो जाते हैं।

- **षष्ठ सर्ग (पृथ्वीराज):** अकबर के दरबारी कवि पृथ्वीराज का पत्र राणा प्रताप को मिलता है, जिसमें वह उनसे मेवाड़ न छोड़ने का आग्रह करता है। इससे प्रताप को आत्मिक बल मिलता है।
- **सप्तम सर्ग (भामाशाह):** अंत में, उनके मंत्री भामाशाह अपनी सारी संपत्ति लेकर आते हैं और मेवाड़ की रक्षा के लिए राणा प्रताप को सौंप देते हैं। इस सहायता से प्रताप पुनः सेना संगठित करने का संकल्प लेते हैं और यहीं काव्य समाप्त हो जाता है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'मेवाड़ मुकुट' की कथावस्तु महाराणा प्रताप के त्याग, शौर्य, संघर्ष और अटूट देशभक्ति की एक मार्मिक गाथा है, जो निराशा से आशा की ओर बढ़ती है और भामाशाह के त्याग के साथ एक नए संकल्प पर समाप्त होती है।

Quick Tip

कथावस्तु या सारांश लिखते समय, सभी सर्गों की मुख्य घटनाओं का संक्षिप्त उल्लेख करें। कथा के प्रवाह (शुरुआत, मध्य के संघर्ष, और अंतिम मोड़) को बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

5(घ)(i). 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर राजसूय-यज्ञ का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

उत्तर :

'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में वर्णित राजसूय यज्ञ का आयोजन युधिष्ठिर द्वारा इंदरप्रस्थ में अपने सम्राट पद की प्रतिष्ठा के लिए किया जाता है। इस यज्ञ का मुख्य उद्देश्य धर्म की स्थापना और आसुरी शक्तियों का विनाश करना है। यज्ञ की सफलता के लिए श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन में पहले अत्याचारी राजा जरासंध का वध किया जाता है। यज्ञ के दौरान सबसे पहले पूजे जाने वाले व्यक्ति (अग्रपूजा) के रूप में भीष्म पितामह श्रीकृष्ण का नाम प्रस्तावित करते हैं, जिसका शिशुपाल विरोध करता है और अंततः श्रीकृष्ण द्वारा मारा जाता है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

राजसूय यज्ञ एक वैदिक अनुष्ठान है जो किसी राजा द्वारा चक्रवर्ती सम्राट की पदवी प्राप्त करने के लिए किया जाता था। 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य की केंद्रीय घटना इसी यज्ञ के आयोजन और उसमें उत्पन्न हुए विवाद पर आधारित है।

Step 3: Detailed Explanation:

'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में राजसूय-यज्ञ का वर्णन इस प्रकार है :

- **यज्ञ का उद्देश्य :** पांडवों को आधा राज्य मिलने के बाद, युधिष्ठिर धर्म की स्थापना और अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से राजसूय यज्ञ का आयोजन करने का निर्णय लेते हैं। श्रीकृष्ण इस यज्ञ के मुख्य प्रेरक और मार्गदर्शक होते हैं।
- **जरासंध का वध :** यज्ञ के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा मगध का अत्याचारी राजा जरासंध था, जिसने कई राजाओं को बंदी बना रखा था। श्रीकृष्ण की योजना के अनुसार, भीम और अर्जुन के साथ वे

ब्राह्मण वेश में मगध जाते हैं, जहाँ भीम के साथ हुए मल्लयुद्ध में जरासंध मारा जाता है। इसके बाद सभी बंदी राजाओं को मुक्त कर दिया जाता है।

- **यज्ञ का आयोजन :** जरासंध के वध के बाद इंद्रप्रस्थ में भव्य यज्ञ का आयोजन होता है। देश-विदेश के सभी महान राजा, ऋषि-मुनि और विद्वान इसमें सम्मिलित होते हैं।
- **अग्रपूजा का प्रसंग :** यज्ञ में यह प्रश्न उठता है कि सबसे पहले किसकी पूजा (अग्रपूजा) की जाए। भीष्म पितामह सभी के मध्य श्रीकृष्ण को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए उनकी अग्रपूजा का प्रस्ताव रखते हैं। सभी इस प्रस्ताव का समर्थन करते हैं।
- **शिशुपाल द्वारा विरोध और उसका वध :** चेदि का राजा शिशुपाल, जो श्रीकृष्ण से द्वेष रखता था, इस प्रस्ताव का घोर विरोध करता है और भरी सभा में श्रीकृष्ण को अपमानित करने लगता है। श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए सौ अपशब्दों की सीमा पार होने पर, वे अपने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध कर देते हैं।
- **यज्ञ की पूर्णाहुति :** शिशुपाल के वध के बाद यज्ञ निर्विघ्न रूप से संपन्न होता है और युधिष्ठिर को सम्राट घोषित किया जाता है।

Step 4: Final Answer:

इस प्रकार, 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में राजसूय यज्ञ धर्म की अधर्म पर विजय का प्रतीक है। यह यज्ञ श्रीकृष्ण के लोकमंगलकारी स्वरूप को स्थापित करता है और दुष्टों के संहार के साथ संपन्न होता है।

Quick Tip

राजसूय यज्ञ का वर्णन करते समय, यज्ञ से पहले की बाधाओं (जैसे जरासंध वध), यज्ञ के दौरान की मुख्य घटना (अग्रपूजा विवाद), और यज्ञ के परिणाम (शिशुपाल वध और यज्ञ की पूर्ति) को क्रमबद्ध रूप से लिखें।

5(घ)(ii). 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर 'श्रीकृष्ण' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

श्री रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के नायक श्रीकृष्ण हैं। काव्य में उन्हें एक अलौकिक पुरुष, सौंदर्य के प्रतीक, साहसी, निर्भीक, शिष्ट, शीलवान, कर्मयोगी और लोकमंगलकारी नेता के रूप में चित्रित किया गया है। वे ही राजसूय यज्ञ के मुख्य सूत्रधार हैं और उन्हीं की अग्रपूजा होती है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

चरित्र-चित्रण में काव्य के नायक के गुणों, आदर्शों और कार्यों का वर्णन किया जाता है। 'अग्रपूजा' में श्रीकृष्ण का चरित्र केंद्र में है, और सारी घटनाएँ उन्हीं के व्यक्तित्व को उजागर करती हैं।

Step 3: Detailed Explanation:

'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के आधार पर श्रीकृष्ण के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **अलौकिक पुरुष :** कवि ने श्रीकृष्ण को एक दिव्य और अलौकिक शक्ति-संपन्न महामानव के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके जीवन में अनेक चमत्कारिक घटनाएँ हैं, जैसे कंस का वध और महाभारत युद्ध में अर्जुन का मार्गदर्शन। भीष्म पितामह उन्हें संसार में रहकर भी कर्मयोगी और अनासक्त बताते हैं।
- **सौंदर्य के प्रतीक :** श्रीकृष्ण का रूप अत्यंत आकर्षक और तेजवान है। जब वे इंद्रप्रस्थ पहुँचते हैं, तो नगर के सभी लोग उनके सौंदर्य पर मोहित हो जाते हैं।
- **साहसी और निर्भीक :** श्रीकृष्ण में अदम्य साहस है। वे धर्म की स्थापना के लिए बड़े से बड़ा संकट मोल लेने से नहीं डरते। जरासंध जैसे शक्तिशाली राजा का वध करवाना और भरी सभा में शिशुपाल को ललकारना उनकी निर्भीकता का प्रमाण है।
- **शिष्ट तथा शीलवान :** अपार शक्ति के स्वामी होते हुए भी श्रीकृष्ण अत्यंत विनम्र और शीलवान हैं। वे बड़ों का आदर करते हैं, कुंती के चरण स्पर्श करते हैं और ब्राह्मणों के पैर धोते हैं।
- **धैर्यवान तथा सहनशील :** शिशुपाल द्वारा भरी सभा में सौ बार अपमानित किए जाने पर भी वे शांत और मुस्कुराते रहते हैं। वे मर्यादा का पालन करते हैं और सीमा पार होने पर ही दुष्टों का संहार करते हैं।
- **लोकमंगलकारी नेता :** श्रीकृष्ण के सभी कार्य लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होते हैं। उनका उद्देश्य पांडवों को उनका अधिकार दिलाना, अत्याचारी राजाओं का अंत करना और पृथ्वी पर धर्म की स्थापना करना है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य में श्रीकृष्ण एक सर्वगुण संपन्न, लोकमंगलकारी, आदर्श पुरुष और सच्चे कर्मयोगी के रूप में चित्रित हैं, जिनका चरित्र आज भी प्रासंगिक और अनुकरणीय है।

Quick Tip

श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण करते समय उनके मानवीय (शिष्ट, विनम्र) और दैवीय (अलौकिक शक्ति) दोनों पक्षों का संतुलन बनाकर लिखें। काव्य की प्रमुख घटनाओं (जरासंध वध, शिशुपाल वध) को उनके चरित्र की विशेषताओं से जोड़कर प्रस्तुत करें।

5(ड)(i). 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

'जय सुभाष' खण्डकाव्य के नायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस हैं। कवि ने उन्हें एक महान देशभक्त, वीर, साहसी, कुशल संगठनकर्ता, त्यागी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक तेजस्वी महानायक के रूप में चित्रित किया है। उनका चरित्र युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

नायक का चरित्र-चित्रण का अर्थ है काव्य के केंद्रीय पात्र के व्यक्तित्व, आदर्शों, और कार्यों की

प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करना। 'जय सुभाष' खण्डकाव्य सुभाषचन्द्र बोस के जीवन और उनके स्वतंत्रता संघर्ष पर आधारित है।

Step 3: Detailed Explanation:

'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर नायक सुभाषचन्द्र बोस के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्न-लिखित हैं:

- **महान देशभक्त :** सुभाषचन्द्र बोस के मन में बचपन से ही देश-प्रेम की प्रबल भावना थी। देश की दुर्दशा देखकर उन्होंने भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने का संकल्प लिया और अपना पूरा जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया।
- **कुशाग्र बुद्धि और त्यागी :** वे बचपन से ही मेधावी छात्र थे। उन्होंने आई.सी.एस. जैसी प्रतिष्ठित परीक्षा उत्तीर्ण की, लेकिन देश सेवा के लिए उन्होंने अंग्रेजी सरकार की नौकरी को त्याग दिया। यह उनके महान त्याग का परिचायक है।
- **वीर और साहसी :** सुभाषचन्द्र बोस निर्भीक और साहसी थे। उन्होंने कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में भारतीयों का अपमान करने वाले अंग्रेज प्रोफेसर ओटन को थप्पड़ मार दिया था, जिससे पता चलता है कि वे अन्याय सहन नहीं कर सकते थे।
- **कुशल संगठनकर्ता और महान नेता :** उन्होंने 'आज़ाद हिन्द फ़ौज' का गठन करके अपनी अद्भुत संगठन क्षमता का परिचय दिया। उन्होंने अपने ओजस्वी भाषणों से सैनिकों और देशवासियों में स्वतंत्रता के लिए एक नया जोश भर दिया।
- **स्वतंत्रता के लिए हर मार्ग को अपनाने वाले :** जहाँ गाँधीजी केवल अहिंसा के पक्षधर थे, वहीं सुभाष यह मानते थे कि स्वतंत्रता प्राप्त के लिए सशस्त्र क्रांति का मार्ग भी अपनाना पड़ सकता है। उनका मानना था कि बलिदान देकर ही आज़ादी हासिल की जा सकती है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'जय सुभाष' खण्डकाव्य में सुभाषचन्द्र बोस एक ऐसे महानायक हैं जो बुद्धि, त्याग, साहस और संगठन क्षमता का अद्भुत संगम हैं। उनका चरित्र भारतीय युवाओं को राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पण करने की प्रेरणा देता है।

Quick Tip

सुभाषचन्द्र बोस का चरित्र-चित्रण करते समय उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं (आई.सी.एस. का त्याग, आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन) का उल्लेख अवश्य करें। यह उनके गुणों को प्रमाणित करता है।

5(ड)(ii). 'जय सुभाष' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

उत्तर :

श्री विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' द्वारा रचित 'जय सुभाष' खण्डकाव्य की कथावस्तु नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के जीवन और स्वतंत्रता संघर्ष पर आधारित है। यह सात सर्गों में विभाजित है। इसमें उनके

जन्म, शिक्षा, आई.सी.एस. के त्याग, स्वतंत्रता आंदोलन में प्रवेश, जेल यात्रा, घर में नजरबंदी से पलायन, विदेश जाकर आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन और देश की आज़ादी के लिए किए गए उनके सशस्त्र संघर्ष का ओजपूर्ण वर्णन है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

कथावस्तु का अर्थ है काव्य की संपूर्ण कहानी का सारांश। इसमें काव्य की प्रमुख घटनाओं को क्रमानुसार प्रस्तुत किया जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

'जय सुभाष' खण्डकाव्य की कथावस्तु, जो सात सर्गों में विभक्त है, का सारांश इस प्रकार है :

- **प्रथम सर्ग:** इसमें सुभाषचन्द्र बोस के जन्म, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा और युवावस्था का वर्णन है। बचपन से ही उन पर अपनी माता के सुनाए वीरता के किस्सों और स्वामी विवेकानंद के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ता है। वे मेधावी छात्र होते हैं और आई.सी.एस. की परीक्षा पास करते हैं।
- **द्वितीय सर्ग:** देश सेवा की भावना से प्रेरित होकर सुभाष आई.सी.एस. का पद त्याग देते हैं और भारत लौटकर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़ते हैं। वे महात्मा गाँधी और देशबन्धु चितरंजन दास के साथ काम करते हैं और जल्द ही एक लोकप्रिय नेता बन जाते हैं।
- **तृतीय सर्ग:** इस सर्ग में सुभाष के क्रांतिकारी विचारों और कार्यों का वर्णन है। वे कांग्रेस के अध्यक्ष बनते हैं, लेकिन गाँधीजी से वैचारिक मतभेद के कारण पद से त्यागपत्र दे देते हैं।
- **चतुर्थ सर्ग:** अंग्रेज सरकार उन्हें उनके घर में ही नजरबंद कर देती है। सुभाष देश की स्वतंत्रता के लिए चिंतित रहते हैं और यहाँ से बाहर निकलने की योजना बनाते हैं।
- **पंचम सर्ग:** इस सर्ग में सुभाष के साहसिक पलायन का वर्णन है। वे वेश बदलकर अंग्रेजी पहरे को चकमा देते हुए अपने घर से निकल जाते हैं और काबुल के रास्ते जर्मनी पहुँचते हैं।
- **षष्ठ सर्ग:** जर्मनी में वे हिटलर से मिलते हैं और फिर वहाँ से सिंगापुर जाकर 'आज़ाद हिन्द फ़ौज' की कमान संभालते हैं। वे 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा' जैसे नारे देते हैं, जो पूरे देश में जोश भर देते हैं।
- **सप्तम सर्ग:** इस अंतिम सर्ग में आज़ाद हिन्द फ़ौज के संघर्ष, कोहिमा और इंफाल के मोर्चों पर उनकी वीरता और विषम परिस्थितियों का वर्णन है। काव्य का अंत सुभाष के विमान दुर्घटना में अंतर्धान होने की सूचना और उनकी अमर कीर्ति के गान के साथ होता है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'जय सुभाष' की कथावस्तु भारत के एक महान स्वतंत्रता सेनानी के त्याग, संघर्ष और बलिदान की एक ओजस्वी गाथा है, जो दर्शाती है कि उन्होंने देश की आज़ादी के लिए किस प्रकार एक सशस्त्र क्रांति का नेतृत्व किया।

Quick Tip

कथावस्तु को सर्गों के अनुसार विभाजित करके लिखने से उत्तर अधिक व्यवस्थित और स्पष्ट होता है। प्रत्येक सर्ग की सबसे महत्वपूर्ण घटना का उल्लेख अवश्य करें।

5(च)(i). 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए ।

उत्तर :

'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग का शीर्षक 'बलिदान' है। इसमें अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद के जीवन के अंतिम क्षणों का मार्मिक एवं वीर रस पूर्ण वर्णन है। इस सर्ग में प्रयाग के अल्फ्रेड पार्क में आजाद का पुलिस के साथ अकेले संघर्ष करना और अंत में जब उनके पास एक गोली बचती है, तो उसे स्वयं अपनी कनपटी पर मारकर वीरगति प्राप्त करने की घटना का चित्रण है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

कथानक लिखने का अर्थ है किसी सर्ग या अध्याय की घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन करना। तृतीय सर्ग 'बलिदान' चंद्रशेखर आजाद के जीवन के चरमोत्कर्ष और उनके बलिदान को समर्पित है।

Step 3: Detailed Explanation:

'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग ('बलिदान') की कथा इस प्रकार है :

- **संघर्ष की योजना :** सर्ग का आरम्भ चंद्रशेखर आजाद के अपने मित्र रुद्र के साथ बैठकर भावी संघर्ष की योजना बनाने से होता है। वे अपने शहीद साथियों को याद करके अंग्रेजों से बदला लेने और भारत माँ को स्वतंत्र कराने के लिए दृढ़ संकल्पित होते हैं।
- **अल्फ्रेड पार्क की घटना :** फरवरी 1931 में, आजाद प्रयाग (इलाहाबाद) के अल्फ्रेड पार्क में अपने कुछ साथियों के साथ गुप्त मंत्रणा कर रहे होते हैं। तभी एक मुखबिर की सूचना पर पुलिस की गाड़ी वहाँ आ पहुँचती है और उन्हें चारों ओर से घेर लेती है।
- **अकेले मोर्चा लेना :** आजाद तुरंत अपने साथियों को वहाँ से भगा देते हैं और अकेले ही जामुन के पेड़ की ओट लेकर पुलिस से मोर्चा लेते हैं। वे अपनी पिस्तौल से एक अफसर को घायल कर देते हैं और अंग्रेज एस.पी. नॉट बाबर से लोहा लेते हैं।
- **वीरतापूर्ण संघर्ष:** एक अकेले वीर सिपाही और विशाल पुलिस दल के बीच घंटों तक गोलियाँ चलती रहती हैं। आजाद अद्भुत वीरता का प्रदर्शन करते हुए लड़ते हैं और नॉट बाबर की कलाई भी घायल कर देते हैं।
- **आत्म-बलिदान :** जब आजाद की पिस्तौल में केवल एक अंतिम गोली बचती है, तो वे सोचते हैं कि वे अंग्रेजों के हाथों जीवित नहीं पकड़े जाएँगे। वे 'भारत माता की जय' का उद्घोष करते हैं और उस अंतिम गोली को अपनी कनपटी पर मारकर आत्म-बलिदान कर देते हैं और वीरगति को प्राप्त होते हैं।
- **शहादत का प्रभाव :** उनकी इस साहसिक मृत्यु से अंग्रेज अफसर भी चकित रह जाते हैं। उनकी शहादत की खबर से पूरा देश स्तब्ध रह जाता है और वह जामुन का पेड़ भारतीयों के लिए एक तीर्थ स्थल बन जाता है।

Step 4: Final Answer:

इस प्रकार, तृतीय सर्ग चंद्रशेखर आजाद के अदम्य साहस, स्वतंत्रता के प्रति अटूट समर्पण और उनके उस ऐतिहासिक आत्म-बलिदान की गाथा है, जिसने उन्हें भारतीय इतिहास में अमर कर दिया।

Quick Tip

'बलिदान' सर्ग का वर्णन करते समय वीर और करुण रस के मिश्रण को बनाए रखें। अल्फ्रेड पार्क की घटना का वर्णन करते हुए आजाद की वीरता, सूझबूझ और अंतिम निर्णय (आत्म-बलिदान) को प्रमुखता से दर्शाएं।

5(च)(ii). 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के मुख्य पात्र का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर :

'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के मुख्य पात्र और नायक अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद हैं। कवि ने उन्हें एक महान देशभक्त, वीर, साहसी, स्वतंत्रता-प्रेमी, कुशल नेतृत्वकर्ता और एक ऐसे बलिदानी के रूप में चित्रित किया है, जिसने मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए जीवित पकड़े न जाने की अपनी प्रतिज्ञा को निभाते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

चरित्रांकन का अर्थ है मुख्य पात्र के व्यक्तित्व, गुणों, आदर्शों और कार्यों का साहित्यिक वर्णन करना। यह खण्डकाव्य चंद्रशेखर आजाद के क्रांतिकारी जीवन पर केंद्रित है।

Step 3: Detailed Explanation:

'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के आधार पर नायक चंद्रशेखर आजाद के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **महान देशभक्त :** आजाद के हृदय में मातृभूमि के प्रति असीम प्रेम और भक्ति थी। उन्होंने बहुत छोटी आयु में ही देश को अंग्रेजों से मुक्त कराने का संकल्प ले लिया था और इसके लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।
- **अदम्य साहसी और वीर :** वीरता और साहस आजाद के चरित्र के मूल तत्व थे। वे अंग्रेजों के शासन को एक खुली चुनौती देते थे। काकोरी कांड हो या सॉन्डर्स की हत्या, उन्होंने हर कार्य में अपनी निर्भीकता का परिचय दिया। अल्फ्रेड पार्क में अकेले सैकड़ों पुलिसकर्मियों से लड़ना उनके अदम्य साहस का प्रमाण है।
- **कुशल संगठनकर्ता और नेता :** वे एक योग्य नेता और संगठनकर्ता थे। उन्होंने भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे क्रांतिकारियों को एकजुट कर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' को एक मजबूत संगठन बनाया।
- **दृढ़-प्रतिज्ञा :** आजाद अपने निश्चय के बहुत पक्के थे। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि वे कभी भी अंग्रेजों के हाथ जीवित नहीं आएँगे। अल्फ्रेड पार्क में अंतिम गोली बचने पर स्वयं को गोली मारकर उन्होंने अपनी इस प्रतिज्ञा को निभाया।
- **त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति :** आजाद ने देश के लिए घर-परिवार और सभी सुखों का त्याग कर दिया। उनका जीवन त्याग और संघर्ष का पर्याय था। अंत में, उन्होंने मातृभूमि के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया, जो उनके त्याग की पराकाष्ठा थी।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य में चंद्रशेखर आजाद का चरित्र एक ऐसे महान क्रांतिकारी का है जो वीरता, देशभक्ति, दृढ़-प्रतिज्ञा और आत्म-बलिदान का प्रतीक है और भारतीय युवाओं के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

Quick Tip

आजाद का चरित्रांकन करते समय उनकी 'आजाद' नाम की सार्थकता और 'कभी जीवित न पकड़े जाने' की प्रतिज्ञा का उल्लेख अवश्य करें। यह उनके चरित्र के सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं।

5(छ)(i). 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' द्वारा रचित 'कर्ण' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र और नायक दानवीर कर्ण हैं। उन्हें एक महान योद्धा, दानवीर, सच्चा मित्र, स्वाभिमानी और परिस्थितियों से संघर्ष करने वाले एक (tragic) महानायक के रूप में चित्रित किया गया है। सूत-पुत्र कहे जाने का अपमान उन्हें जीवन भर सहना पड़ता है, फिर भी वे अपने पुरुषार्थ और गुणों से अपनी पहचान बनाते हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

चरित्र-चित्रण का अर्थ है काव्य के नायक के व्यक्तित्व, उसके गुण-दोषों, उसकी भावनाओं और संघर्षों का साहित्यिक विश्लेषण करना। 'कर्ण' खण्डकाव्य कर्ण के जीवन की विडंबनाओं और उनकी चारित्रिक महानता पर केंद्रित है।

Step 3: Detailed Explanation:

'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर नायक कर्ण के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **महान योद्धा :** कर्ण एक अतुलनीय धनुर्धर थे। रंगभूमि में उन्होंने अर्जुन को चुनौती देकर अपनी वीरता का परिचय दिया था। महाभारत के युद्ध में उनके पराक्रम से पांडव सेना भी कांप उठती थी।
- **अद्वितीय दानवीर :** कर्ण अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपने जीवन की रक्षा करने वाले कवच और कुंडल भी इंद्र के मांगने पर बिना किसी संकोच के दान कर दिए थे। यह उनकी दानशीलता की पराकाष्ठा थी।
- **सच्चा मित्र :** कर्ण एक आदर्श और सच्चे मित्र थे। दुर्योधन ने जब उन्हें अपमान से बचाकर अंग देश का राजा बनाया, तो कर्ण उसके इस उपकार के प्रति जीवन भर कृतज्ञ रहे। उन्होंने जानते हुए भी कि वे अधर्म के पक्ष में हैं, केवल मित्रता निभाने के लिए दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ा।
- **स्वाभिमानी और पुरुषार्थी:** जन्म से ही भाग्य द्वारा छले जाने और समाज द्वारा 'सूत-पुत्र' कहकर अपमानित होने के बावजूद, कर्ण ने कभी हार नहीं मानी। उन्होंने अपने पुरुषार्थ और योग्यता के बल पर अपनी पहचान बनाई। उनका स्वाभिमान उन्हें किसी के सामने झुकने नहीं देता था।
- **एक (Tragic Hero):** कर्ण का जीवन और विडंबनाओं से भरा था। वे कुंती-पुत्र होते हुए भी यह सत्य नहीं जान पाए, और अनजाने में अपने ही भाइयों के विरुद्ध लड़े। समाज का

तिरस्कार और भाग्य की प्रतिकूलता उनके जीवन की नियति बनी रही, फिर भी वे अपने आदर्शों पर अडिग रहे।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'कर्ण' खण्डकाव्य में कर्ण एक ऐसे महानायक हैं जो वीरता, दानवीरता और मित्रता जैसे गुणों से युक्त होते हुए भी सामाजिक तिरस्कार और भाग्य की विडंबनाओं का शिकार होते हैं। उनका चरित्र महान और प्रेरणादायक होने के साथ-साथ अत्यंत मार्मिक भी है।

Quick Tip

कर्ण का चरित्र-चित्रण करते समय उनके जीवन के दोहरे पहलुओं—उनकी महानता (दान, वीरता, मित्रता) और उनकी [?] (जातिगत अपमान, भाग्य की विडंबना)—को संतुलित रूप से प्रस्तुत करें। कवच-कुंडल दान का प्रसंग अवश्य लिखें।

5(छ)(ii). 'कर्ण' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' द्वारा रचित 'कर्ण' खण्डकाव्य की कथावस्तु महाभारत के प्रसिद्ध पात्र कर्ण के जीवन पर आधारित है। यह सात सर्गों में विभक्त है। इसमें कर्ण के जन्म के रहस्य, 'सूत-पुत्र' के रूप में उनका पालन-पोषण, समाज द्वारा उनका तिरस्कार, दुर्योधन से उनकी मित्रता, उनकी दानवीरता (कवच-कुंडल दान), श्रीकृष्ण और कुंती द्वारा उन्हें पांडवों के पक्ष में लाने का प्रयास और अंत में महाभारत युद्ध में उनकी वीरगति का मार्मिक वर्णन है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

कथावस्तु का अर्थ है काव्य की संपूर्ण कहानी का सारांश। इसमें काव्य की प्रमुख घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करना होता है।

Step 3: Detailed Explanation:

'कर्ण' खण्डकाव्य की सात सर्गों में वर्णित कथावस्तु का सारांश इस प्रकार है :

- **प्रथम सर्ग (रंगशाला में कर्ण):** इसमें कर्ण के जन्म, नदी में बहाए जाने, और सूत अधिरथ द्वारा पालन-पोषण का वर्णन है। हस्तिनापुर की रंगशाला में वे अपनी धनुर्विद्या का प्रदर्शन कर अर्जुन को ललकारते हैं, किंतु 'सूत-पुत्र' कहकर कृपाचार्य द्वारा अपमानित किए जाते हैं। यहीं दुर्योधन उन्हें अंग देश का राजा बनाकर उनसे मित्रता करता है।
- **द्वितीय सर्ग (द्यूतसभा में द्रौपदी):** इसमें द्यूत-क्रीड़ा में पांडवों के हारने और द्रौपदी के चीर-हरण की घटना है। द्रौपदी स्वयंवर में हुए अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए कर्ण भी द्रौपदी को अपमानित करने में दुर्योधन का साथ देते हैं, जिसके लिए वे बाद में पछताते हैं।
- **तृतीय सर्ग (कवच-कुंडल दान):** महाभारत युद्ध से पूर्व, इंद्र अपने पुत्र अर्जुन की रक्षा के लिए ब्राह्मण वेश में कर्ण के पास आते हैं और उनसे उनके जन्मजात कवच और कुंडल दान में मांग लेते

हैं। कर्ण सब कुछ जानते हुए भी याचक को निराश न करने के अपने प्रण के कारण उन्हें दान दे देते हैं।

- **चतुर्थ सर्ग (श्रीकृष्ण और कर्ण):** युद्ध टालने के लिए श्रीकृष्ण कर्ण से मिलते हैं, उन्हें उनके जन्म का रहस्य बताते हैं और पांडवों के पक्ष में आने का आग्रह करते हैं। कर्ण मित्रता का धर्म निभाने के लिए इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर देते हैं।
- **पंचम सर्ग (माँ-बेटा):** माता कुंती भी कर्ण से मिलती हैं और उन्हें पांडवों का साथ देने के लिए कहती हैं। कर्ण उन्हें वचन देते हैं कि वे अर्जुन को छोड़कर उनके अन्य किसी पुत्र का वध नहीं करेंगे।
- **षष्ठ सर्ग (कर्ण-वध):** इस सर्ग में महाभारत युद्ध में कर्ण के पराक्रम का वर्णन है। वे कौरव सेना के सेनापति बनते हैं। अंत में, जब उनके रथ का पहिया धरती में धंस जाता है, तब निहत्थे कर्ण का अर्जुन द्वारा वध कर दिया जाता है।
- **सप्तम सर्ग (जलांजलि):** इसमें कर्ण की मृत्यु के बाद पांडवों और कुंती के विलाप का वर्णन है। युधिष्ठिर कर्ण की महानता को स्वीकार करते हुए उन्हें जलांजलि देते हैं।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'कर्ण' खण्डकाव्य की कथावस्तु एक महान, गुणी और दानवीर योद्धा के जीवन की गाथा है, जो सामाजिक अन्याय और भाग्य की विडंबनाओं से जूझते हुए भी मित्रता और वचन के अपने आदर्शों से विचलित नहीं होता।

Quick Tip

'कर्ण' की कथावस्तु लिखते समय उन महत्वपूर्ण क्षणों का उल्लेख अवश्य करें जो उनके चरित्र को परिभाषित करते हैं, जैसे - रंगशाला में दुर्योधन से मित्रता, कवच-कुंडल का दान, और श्रीकृष्ण-कुंती से संवाद।

5(ज)(i). 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के 'आदर्श वरण' सर्ग का कथानक लिखिए।

उत्तर :

'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग 'आदर्श वरण' में भरत के अयोध्या लौटने पर उनके शोक, ग्लानि और आदर्श चरित्र का वर्णन है। ननिहाल से लौटने पर जब उन्हें पिता दशरथ की मृत्यु और राम के वनवास का पता चलता है, तो वे अत्यंत दुखी और मूच्छित हो जाते हैं। गुरु वशिष्ठ उन्हें सांत्वना देते हैं। इसके बाद भरत, कैकेयी द्वारा दिए गए राज्य के प्रस्ताव को ठुकरा कर, राम को ही राजा मानने का आदर्श प्रस्तुत करते हैं और पिता का दाह-संस्कार करते हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

कथानक का अर्थ है किसी सर्ग या अध्याय की घटनाओं का क्रमबद्ध वर्णन। 'आदर्श वरण' सर्ग भरत के चरित्र के उस पक्ष को उजागर करता है जहाँ वे त्याग और आदर्श का मार्ग चुनते हैं।

Step 3: Detailed Explanation:

'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के 'आदर्श वरण' सर्ग का कथानक इस प्रकार है :

- **भरत का शोक :** ननिहाल से अयोध्या लौटने पर भरत को जब अपनी माता कैकेयी से पिता दशरथ की मृत्यु और राम, लक्ष्मण, सीता के वनवास का समाचार मिलता है, तो वे शोक से व्याकुल हो जाते हैं।
- **गुरु वशिष्ठ द्वारा सांत्वना :** भरत पिता के शव को देखकर मूच्छित हो जाते हैं। चेतना लौटने पर गुरु वशिष्ठ उन्हें समझाते हुए संसार की नश्वरता और जीवन-मृत्यु के चक्र का ज्ञान देते हैं।
- **राज्य का तिरस्कार :** भरत को जब यह पता चलता है कि यह सब उनकी माता ने उनके लिए राज्य मांगने के लिए किया है, तो उन्हें अपार ग्लानि होती है। वे अपनी माता को धिक्कारते हैं और स्पष्ट रूप से राज्य को स्वीकार करने से मना कर देते हैं।
- **आदर्श की स्थापना :** भरत यह आदर्श प्रस्तुत करते हैं कि रघुकुल की परंपरा के अनुसार ज्येष्ठ पुत्र राम ही राज्य के सच्चे अधिकारी हैं। वे किसी भी कीमत पर इस मर्यादा को नहीं तोड़ेंगे।
- **पिता का दाह-संस्कार :** अंत में, अत्यंत शोकाकुल अवस्था में भरत सरयू नदी के किनारे अपने पिता राजा दशरथ का दाह-संस्कार करते हैं। इस पूरे प्रसंग में उनका भ्रातृ-प्रेम और त्याग का भाव प्रकट होता है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'आदर्श वरण' सर्ग में भरत के अयोध्या आगमन के बाद के घटनाक्रम का वर्णन है, जिसमें वे शोक और ग्लानि से भरे होने के बावजूद, लोभ को त्यागकर मर्यादा और भ्रातृ-प्रेम के आदर्श का वरण करते हैं।

Quick Tip

'आदर्श वरण' सर्ग का कथानक लिखते समय, भरत की मानसिक स्थिति (शोक, ग्लानि) और उनके द्वारा लिए गए निर्णय (राज्य का तिरस्कार) पर विशेष ध्यान दें। यही इस सर्ग का केंद्रीय भाव है।

5(ज)(ii). 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्रांकन कीजिए।

उत्तर :

श्री लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' द्वारा रचित 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र और नायक भरत हैं। काव्य में उन्हें एक आदर्श महापुरुष, आज्ञाकारी पुत्र, महान त्यागी, राज्य के लोभ से रहित, उत्कृष्ट भ्रातृ-प्रेमी और सच्चे कर्मयोगी के रूप में चित्रित किया गया है। उनका चरित्र भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्शों का प्रतीक है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

चरित्रांकन का अर्थ है काव्य के नायक के व्यक्तित्व, गुणों, आदर्शों और कार्यों का साहित्यिक वर्णन करना। 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य भरत के त्यागमय और कर्मशील चरित्र पर केंद्रित है।

Step 3: Detailed Explanation:

'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर नायक भरत के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **आज्ञाकारी :** भरत एक आज्ञाकारी पुत्र और शिष्य हैं। जब गुरु वशिष्ठ उन्हें दूत भेजकर अयोध्या बुलाते हैं, तो वे बिना कोई प्रश्न किए तुरंत ननिहाल से लौट आते हैं।
- **राज्य के लोभ से रहित (त्यागी):** भरत के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उनका त्याग है। जब उन्हें पता चलता है कि माता कैकेयी ने उनके लिए राज्य माँगा है, तो उन्हें अपार दुःख और ग्लानि होती है। वे सहज ही प्राप्त हुए राज्य को ठुकरा देते हैं क्योंकि उसे वे अपने बड़े भाई राम का अधिकार मानते हैं।
- **उत्कृष्ट भ्रातृ-प्रेमी :** भरत के हृदय में अपने भाई राम के प्रति असीम प्रेम और श्रद्धा है। राम के वनवास से वे अत्यंत दुखी हैं। वे वन में जाकर राम को लौटा लाने का हर संभव प्रयास करते हैं।
- **आदर्श महापुरुष एवं मर्यादापालक :** भरत एक आदर्श पुरुष हैं जो छल-कपट से कोसों दूर हैं। वे रघुकुल की मर्यादा का पालन करते हुए कहते हैं कि ज्येष्ठ पुत्र ही राज्य का अधिकारी होता है।
- **सच्चे योगी और कर्मवीर :** राम के वनवास की अवधि में, भरत राजा के रूप में सिंहासन पर नहीं बैठते, बल्कि नंदीग्राम में एक कुटी बनाकर एक तपस्वी की तरह जीवन व्यतीत करते हैं और राम की खड़ाऊँ को सिंहासन पर रखकर एक सेवक की भाँति राज-काज चलाते हैं। यह उनके सच्चे कर्मयोगी स्वरूप को दर्शाता है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य में भरत का चरित्र त्याग, भ्रातृ-प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा और अनासक्ति का एक अनुपम उदाहरण है। वे राजभवन में रहकर भी एक योगी की तरह जीवन जीने वाले सच्चे कर्मवीर हैं।

Quick Tip

भरत का चरित्रांकन करते समय उनके त्याग और भ्रातृ-प्रेम पर विशेष बल दें। नंदीग्राम में तपस्वी की तरह रहकर राज-काज चलाने का प्रसंग उनके 'कर्मवीर' स्वरूप को सिद्ध करता है, इसका उल्लेख अवश्य करें।

5(अ)(i). 'तुमुल' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

उत्तर :

श्री श्यामनारायण पाण्डेय द्वारा रचित 'तुमुल' खण्डकाव्य की कथावस्तु रामायण के लंका कांड से ली गई है। इसमें मुख्य रूप से लक्ष्मण और मेघनाद के बीच हुए भयंकर युद्ध का वर्णन है। पंद्रह सर्गों में विभाजित इस काव्य में मेघनाद का पराक्रम, लक्ष्मण का शक्ति बाण से मूर्च्छित होना, हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाना, लक्ष्मण का पुनः सचेत होना और अंत में लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का वध करना प्रमुख घटनाएँ हैं।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

कथावस्तु का अर्थ है किसी काव्य की संपूर्ण कहानी का सारांश, जिसमें मुख्य घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

'तुमुल' खण्डकाव्य की सर्गानुसार कथावस्तु का सारांश इस प्रकार है :

- **प्रारंभिक सर्ग (1-6):** काव्य का आरम्भ ईश-वंदना से होता है। इसके बाद दशरथ-पुत्रों के जन्म, रावण-पुत्र मेघनाद के पराक्रम, और राम द्वारा मकराक्ष के वध का वर्णन है। मकराक्ष की मृत्यु से चिंतित रावण अपने वीर पुत्र मेघनाद को युद्ध में जाने का आदेश देता है और मेघनाद लक्ष्मण को मारने की प्रतिज्ञा करता है।
- **मध्य के सर्ग (7-11):** मेघनाद युद्ध के लिए प्रस्थान करता है और राम की सेना में हाहाकार मचा देता है। उसका लक्ष्मण के साथ भयंकर युद्ध होता है। युद्ध के दौरान मेघनाद अपनी अमोघ शक्ति का प्रयोग कर लक्ष्मण को मूर्च्छित कर देता है। लक्ष्मण की मूर्च्छा से राम की सेना में शोक व्याप्त हो जाता है और राम विलाप करने लगते हैं।
- **संजीवनी प्रसंग (12):** विभीषण के कहने पर हनुमानजी वैद्य सुषेण को लाते हैं। सुषेण के बताने पर हनुमान सूर्योदय से पहले संजीवनी बूटी लाने के लिए पूरा द्रोण पर्वत ही उठा लाते हैं। संजीवनी के प्रभाव से लक्ष्मण पुनः सचेत हो जाते हैं।
- **अंतिम सर्ग (13-15):** विभीषण राम को सूचना देते हैं कि मेघनाद निकुम्भिला नामक स्थान पर अजेय होने के लिए यज्ञ कर रहा है। लक्ष्मण यज्ञ में विघ्न डालते हैं और मेघनाद से पुनः युद्ध करते हैं। इस अंतिम और निर्णायक युद्ध में लक्ष्मण के हाथों मेघनाद का वध हो जाता है। काव्य का अंत राम की वंदना के साथ होता है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'तुमुल' खण्डकाव्य की कथावस्तु लक्ष्मण और मेघनाद के बीच हुए महासंग्राम पर केंद्रित एक वीर रस प्रधान आख्यान है, जो अधर्म पर धर्म की और आसुरी शक्ति पर दैवीय शक्ति की विजय को दर्शाती है।

Quick Tip

'तुमुल' की कथावस्तु लिखते समय लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध को केंद्र में रखें। लक्ष्मण का मूर्च्छित होना और संजीवनी द्वारा पुनः जीवित होना कथा का महत्वपूर्ण मोड़ है, इसका उल्लेख अवश्य करें।

5(झ)(ii). 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर 'मेघनाद' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर :

'तुमुल' खण्डकाव्य में मेघनाद रावण का पराक्रमी पुत्र और एक महान योद्धा है। उसे एक वीर, साहसी, पितृभक्त, अदम्य पराक्रमी और अपने पक्ष के लिए लड़ने वाले एक तेजस्वी पात्र के रूप में चित्रित किया गया है। यद्यपि वह अधर्म के पक्ष में है, तथापि उसकी वीरता और युद्ध-कौशल प्रशंसनीय है।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

चरित्र-चित्रण का अर्थ है किसी पात्र के व्यक्तित्व, गुण-दोषों और कार्यों का साहित्यिक वर्णन करना।

मेघनाद 'तुमुल' खण्डकाव्य का एक प्रमुख पात्र (खलनायक) है, जिसका चरित्र वीरता और पराक्रम से पूर्ण है।

Step 3: Detailed Explanation:

'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर मेघनाद के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **अतुलनीय वीर और पराक्रमी :** मेघनाद एक महान योद्धा है। उसने अपनी युवावस्था में ही इन्द्र के पुत्र जयंत को पराजित कर दिया था, जिस कारण उसका नाम 'इन्द्रजीत' पड़ा। युद्ध-भूमि में उसके पराक्रम के सामने टिकना किसी के लिए भी कठिन था।
- **पितृभक्त :** मेघनाद एक आज्ञाकारी और पितृभक्त पुत्र है। जब उसके भाई मकराक्ष की मृत्यु के बाद पिता रावण चिंतित होते हैं, तो वह तुरंत उनकी आज्ञा मानकर युद्ध के लिए तैयार हो जाता है। वह अपने पिता के सम्मान और लंका की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देता है।
- **कुशल योद्धा और मायावी :** वह केवल शस्त्र-विद्या में ही नहीं, बल्कि मायावी युद्ध में भी निपुण था। वह अपनी माया से अदृश्य होकर युद्ध करने की क्षमता रखता था, जिससे वानर सेना में भय व्याप्त हो जाता था।
- **स्वाभिमानी :** मेघनाद अत्यंत स्वाभिमानी है। जब लक्ष्मण उसके यज्ञ में विघ्न डालते हैं, तो वह इसे क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध मानता है और लक्ष्मण को धिक्कारता है। वह अपनी शक्ति और वीरता पर गर्व करता है।
- **अधर्म के पक्ष में योद्धा :** उसके चरित्र का नकारात्मक पक्ष यह है कि वह जानते हुए भी कि उसके पिता ने अधर्म किया है, उनका साथ देता है। वह अपने कुल और राज्य के प्रति निष्ठा के कारण धर्म और अधर्म का विचार नहीं करता, जो अंततः उसके विनाश का कारण बनता है।

Step 4: Final Answer:

इस प्रकार, 'तुमुल' खण्डकाव्य में मेघनाद का चरित्र एक वीर, पितृभक्त और पराक्रमी योद्धा का है। भले ही वह अधर्म के पक्ष का प्रतिनिधित्व करता हो, लेकिन उसकी वीरता और युद्ध-कौशल उसे एक प्रभावशाली पात्र बनाते हैं।

Quick Tip

मेघनाद का चरित्र-चित्रण करते समय उसकी वीरता और पितृभक्ति जैसे सकारात्मक गुणों के साथ-साथ उसके नकारात्मक पक्ष (अधर्म का साथ देना) का भी उल्लेख करें। इससे उत्तर संतुलित बनता है।

6(क)(i). निम्नलिखित लेखकों में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए : रामधारी सिंह 'दिनकर'

उत्तर :

जीवन-परिचय : राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 1908 ई० में बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में हुआ था। इन्होंने पटना विश्वविद्यालय से बी०ए० की उपाधि प्राप्त की। दिनकर जी

बिहार सरकार के अधीन सब-रजिस्ट्रार, भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति और भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार के रूप में कार्यरत रहे। इनका निधन 1974 ई० में हुआ।

प्रमुख रचना : उर्वशी (ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित महाकाव्य)।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न में लेखक का जीवन-परिचय और उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख करना है। जीवन-परिचय में जन्म, स्थान, शिक्षा, कार्य और मृत्यु का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908 ई० - 1974 ई०)

- **जीवन-परिचय :** हिन्दी के यशस्वी कवि और निबंधकार रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 30 सितम्बर, 1908 ई० को बिहार राज्य के मुंगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रवि सिंह और माता का नाम श्रीमती मनरूप देवी था। इन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में बी०ए० ऑनर्स की परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ समय तक इन्होंने प्रधानाध्यापक के पद पर कार्य किया, फिर बिहार सरकार में सब-रजिस्ट्रार बने। बाद में ये भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति और भारत सरकार के गृह-विभाग में हिन्दी सलाहकार के पदों पर भी रहे। इन्हें 'पद्म-भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया। 'उर्वशी' नामक कृति के लिए इन्हें भारतीय 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 24 अप्रैल, 1974 ई० को इनका देहावसान हो गया।
- **साहित्यिक परिचय :** दिनकर जी की सबसे बड़ी विशेषता उनका समय के साथ गतिशील रहना है। वे एक ओर अपनी कविताओं से अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध क्रांति का बिगुल बजाते थे, तो दूसरी ओर संस्कृति और दर्शन पर गंभीर चिंतन करते थे। उनकी भाषा ओजस्वी, प्रवाहमयी और सरल है। उन्हें 'राष्ट्रकवि' के रूप में जाना जाता है।
- **प्रमुख रचनाएँ :**
 - काव्य : रेणुका, हुंकार, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा।
 - गद्य : संस्कृति के चार अध्याय, अर्धनारीश्वर, मिट्टी की ओर, रेती के फूल।

Step 4: Final Answer:

अतः, रामधारी सिंह 'दिनकर' ओज और राष्ट्रीय चेतना के कवि थे, जिनका जन्म 1908 में बिहार में हुआ था। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'उर्वशी' महाकाव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसके लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

Quick Tip

जीवन-परिचय लिखते समय महत्वपूर्ण तिथियों, स्थानों, पुरस्कारों और पदों को रेखांकित करना या अलग से दिखाना उत्तर को प्रभावी बनाता है। रचनाओं को काव्य और गद्य जैसी श्रेणियों में बाँटकर लिखना भी अच्छा अभ्यास है।

6(क)(ii). निम्नलिखित लेखकों में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए : डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

उत्तर :

जीवन-परिचय : भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म 1884 ई० में बिहार के छपरा जिले के जीरादेई नामक गाँव में हुआ था। इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०ए० और एम०एल० की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। गाँधीजी से प्रभावित होकर ये स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और कई बार जेल गए। ये भारतीय संविधान सभा के स्थायी अध्यक्ष थे। 1963 ई० में इनका निधन हो गया।

प्रमुख रचना : मेरी आत्मकथा।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न में लेखक का जीवन-परिचय और उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख करना है। जीवन-परिचय में जन्म, स्थान, शिक्षा, राष्ट्रीय योगदान और मृत्यु का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद (1884 ई० - 1963 ई०)

- **जीवन-परिचय :** देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद का जन्म सन् 1884 ई० में बिहार राज्य के छपरा जिले के जीरादेई नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम महादेव सहाय था। ये अत्यन्त मेधावी छात्र थे और इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०ए० तथा कानून (एम०एल०) की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। इन्होंने कुछ समय तक मुजफ्फरपुर कॉलेज में अध्यापन कार्य किया और बाद में पटना और कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत की। ये गाँधीजी के आदर्शों से बहुत प्रभावित थे, जिसके कारण इन्होंने वकालत छोड़कर चम्पारण के सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया। ये तीन बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभापति और भारत के संविधान का निर्माण करने वाली सभा के अध्यक्ष चुने गए। सादा जीवन और उच्च विचार इनके जीवन का मूलमंत्र था। इन्हें भारत के प्रथम राष्ट्रपति होने का गौरव प्राप्त हुआ। भारत सरकार ने इन्हें 'भारत रत्न' की सर्वोच्च उपाधि से सम्मानित किया। 28 फरवरी, 1963 ई० को इनका निधन हो गया।
- **साहित्यिक परिचय :** डॉ० राजेन्द्र प्रसाद एक कुशल राजनेता होने के साथ-साथ उच्चकोटि के विचारक और साहित्यकार भी थे। उनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना, समाज सुधार और भारतीय संस्कृति की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। उनकी भाषा सरल, सुबोध और व्यावहारिक है।
- **प्रमुख रचनाएँ :** भारतीय शिक्षा, गाँधीजी की देन, शिक्षा और संस्कृति, मेरी आत्मकथा, बापू के कदमों में, मेरी यूरोप-यात्रा, संस्कृति का अध्ययन, चम्पारन में महात्मा गाँधी तथा खादी का अर्थशास्त्र।

Step 4: Final Answer:

अतः, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे, जिनका जन्म 1884 में बिहार में हुआ था। वे एक महान स्वतंत्रता सेनानी और विद्वान थे। उनकी 'मेरी आत्मकथा' एक प्रसिद्ध साहित्यिक कृति है।

Quick Tip

किसी राजनेता का साहित्यिक परिचय देते समय उनके राजनीतिक जीवन के महत्वपूर्ण पदों (जैसे राष्ट्रपति, संविधान सभा अध्यक्ष) का उल्लेख अवश्य करें। यह उनके व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करता है।

6(क)(iii). निम्नलिखित लेखकों में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए : पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी ।

उत्तर :

जीवन-परिचय : पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी का जन्म 1894 ई० में मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले के खैरागढ़ नामक स्थान पर हुआ था। इन्होंने बी०ए० तक की शिक्षा प्राप्त की और साहित्य सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। ये द्विवेदी युग के एक प्रमुख साहित्यकार थे और इन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन भी किया। 1971 ई० में इनका निधन हो गया।

प्रमुख रचना : पंचपात्र (निबंध संग्रह)।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न में लेखक का जीवन-परिचय और उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख करना है। जीवन-परिचय में जन्म, स्थान, शिक्षा, साहित्यिक योगदान और मृत्यु का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी (1894 ई० - 1971 ई०)

- **जीवन-परिचय :** हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी का जन्म सन् 1894 ई० में खैरागढ़ (मध्य प्रदेश) में हुआ था। इनके पिता श्री पुन्नलाल बख्शी भी एक साहित्य-प्रेमी व्यक्ति थे। बख्शी जी ने बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद साहित्य-सेवा में प्रवेश किया। इनकी साहित्यिक प्रतिभा को पहचानकर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इन्हें अपनी पत्रिका 'सरस्वती' के उप-संपादक के रूप में नियुक्त किया। द्विवेदी जी के बाद इन्होंने कुशलतापूर्वक 'सरस्वती' का संपादन कार्य संभाला। ये एक गंभीर विचारक, समीक्षक और निबंधकार थे। 1971 ई० में इनका स्वर्गवास हो गया।
- **साहित्यिक परिचय :** बख्शी जी द्विवेदी युग के एक महत्वपूर्ण गद्यकार हैं। उनकी पहचान एक कुशल निबंधकार और समालोचक के रूप में है। उनके निबंधों में विचार और अनुभूति का सुंदर समन्वय मिलता है। उनकी भाषा सरल, स्वाभाविक और प्रवाहपूर्ण है, जिसमें व्यंग्य का पुट भी देखने को मिलता है।
- **प्रमुख रचनाएँ :**
 - निबंध संग्रह : पंचपात्र, पद्मवन, कुछ बिखरे पन्ने, मकरंद बिन्दु।
 - आलोचना : विश्व साहित्य, हिन्दी साहित्य विमर्श, हिन्दी उपन्यास साहित्य।
 - कहानी संग्रह : झलमला, अंजलि।

Step 4: Final Answer:

अतः, पदुमलाल पुन्नलाल बख्शी द्विवेदी युग के एक प्रसिद्ध निबंधकार और आलोचक थे, जिनका जन्म 1894 में हुआ था। उन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन भी किया। उनका प्रसिद्ध निबंध संग्रह 'पंचपात्र' है।

Quick Tip

बख्शी जी जैसे साहित्यकारों का परिचय देते समय, उनके साहित्यिक गुरु या प्रेरक (जैसे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी) और उनके द्वारा संपादित पत्रिका ('सरस्वती') का उल्लेख करना बहुत महत्वपूर्ण है।

6(ख)(i). निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए : सूरदास

उत्तर :

जीवन-परिचय : भक्तिकाल की कृष्ण-भक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि सूरदास का जन्म सन् 1478 ई० के लगभग आगरा के निकट रुनकता नामक ग्राम में हुआ था। ये जन्मांध थे, इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। इनके गुरु का नाम वल्लभाचार्य था, जिनसे दीक्षा लेकर इन्होंने कृष्ण-लीला का गान प्रारम्भ किया। इनका निधन सन् 1583 ई० के लगभग पारसौली में हुआ।

प्रमुख रचना : सूरसागर।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न में कवि का जीवन-परिचय और उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख करना है। जीवन-परिचय में जन्म, स्थान, गुरु, भक्ति-पद्धति और मृत्यु का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

सूरदास (सन् 1478 ई० - सन् 1583 ई०)

- **जीवन-परिचय :** हिन्दी साहित्य के सूर्य, महाकवि सूरदास जी का जन्म वैशाख सुदी पंचमी, सन् 1478 ई० को रुनकता नामक ग्राम में हुआ था। कुछ विद्वान इनका जन्म-स्थान दिल्ली के निकट 'सीही' ग्राम को मानते हैं। इनके पिता का नाम रामदास सारस्वत था। सूरदास जी जन्मांध थे या नहीं, इस संबंध में अनेक मत हैं, किन्तु उन्होंने कृष्ण की बाल-लीलाओं का जैसा सजीव वर्णन किया है, वैसा जन्मांध व्यक्ति से संभव नहीं प्रतीत होता। ये आगरा के समीप गऊघाट पर रहते थे, जहाँ इनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई। वल्लभाचार्य ने इन्हें अपना शिष्य बना लिया और श्रीनाथजी के मंदिर में कीर्तन का भार सौंप दिया। इनका निधन सन् 1583 ई० में गोवर्धन के पास पारसौली नामक ग्राम में हुआ।
- **साहित्यिक परिचय :** सूरदास जी कृष्ण-भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। इन्होंने श्रीकृष्ण के सगुण रूप का लीला-गान किया है। इनके पदों में वात्सल्य और श्रृंगार रस का अद्भुत संगम है। बाल-मनोविज्ञान का जैसा सूक्ष्म चित्रण सूरदास ने किया है, वैसा विश्व-साहित्य में दुर्लभ है। इनकी

भाषा शुद्ध, साहित्यिक ब्रजभाषा है, जो माधुर्य से परिपूर्ण है। इन्हें 'अष्टछाप' का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है।

• **प्रमुख रचनाएँ :** इनकी तीन प्रमुख रचनाएँ हैं:

- **सूरसागर :** यह सूरदास जी की कीर्ति का अक्षय भंडार है। इसमें सवा लाख पद माने जाते हैं, किन्तु अब लगभग दस हजार पद ही उपलब्ध हैं। इसमें कृष्ण की बाल-लीलाओं, गोपी-प्रेम, उद्धव-गोपी संवाद (भ्रमरगीत) का विस्तृत वर्णन है।
- **सूरसारावली :** इसमें 1107 पद हैं। यह 'सूरसागर' का सार-भाग है।
- **साहित्य-लहरी :** इसमें 118 पद हैं। यह दृष्टिकूट पदों का संग्रह है।

Step 4: Final Answer:

अतः, सूरदास भक्तिकाल के कृष्ण-भक्ति शाखा के सर्वोपरि कवि थे, जिनका जन्म सन् 1478 ई० के आसपास हुआ था। उनके गुरु वल्लभाचार्य थे। उनकी अमर कृति का नाम 'सूरसागर' है।

Quick Tip

भक्तिकालीन कवियों का परिचय देते समय उनकी भक्ति-शाखा (जैसे कृष्ण-भक्ति), उनके गुरु और उनके आराध्य देव का उल्लेख अवश्य करें। 'अष्टछाप' जैसे महत्वपूर्ण साहित्यिक समूहों में उनके स्थान का जिक्र भी उत्तर को बेहतर बनाता है।

6(ख)(ii). निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए : महादेवी वर्मा

उत्तर :

जीवन-परिचय : आधुनिक युग की मीरा, महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई० में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद नगर में हुआ था। इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम०ए० किया। ये 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की प्रधानाचार्या रहीं। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया। इनका निधन सन् 1987 ई० में हुआ।

प्रमुख रचना : यामा (ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित काव्य-संग्रह)।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न में कवयित्री का जीवन-परिचय और उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख करना है। जीवन-परिचय में जन्म, स्थान, शिक्षा, पुरस्कार और मृत्यु का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

महादेवी वर्मा (सन् 1907 ई० - सन् 1987 ई०)

- **जीवन-परिचय :** वेदना की अमर गायिका और 'आधुनिक युग की मीरा' के नाम से प्रसिद्ध महादेवी वर्मा का जन्म होलिका दहन के दिन सन् 1907 ई० को फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इनके पिता श्री गोविन्द प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे और माता हेमरानी

देवी एक धर्मपरायण महिला थीं। महादेवी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में और उच्च शिक्षा प्रयाग में प्राप्त की। इन्होंने संस्कृत में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की और 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' में प्रधानाचार्या के पद पर कार्यरत रहीं। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। 'यामा' नामक काव्य-संग्रह पर इन्हें भारतीय 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। 11 सितम्बर, 1987 ई० को प्रयाग में इनका निधन हो गया।

- **साहित्यिक परिचय :** महादेवी वर्मा छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। इनके काव्य में विरह-वेदना और रहस्यवादी भावना की प्रधानता है। इन्होंने अपने काव्य में अज्ञात प्रियतम के प्रति अपनी विरह-वेदना को गीतों के रूप में व्यक्त किया है। इनके गीत संगीतात्मकता और भाव-प्रवणता से ओत-प्रोत हैं। इन्होंने उत्कृष्ट गद्य-रचनाएँ भी की हैं, जिनमें रेखाचित्र और संस्मरण प्रमुख हैं।
- **प्रमुख रचनाएँ :**
 - काव्य-संग्रह : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा।
 - गद्य-रचनाएँ : अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ (रेखाचित्र); शृंखला की कड़ियाँ (निबंध); पथ के साथी (संस्मरण)।

Step 4: Final Answer:

अतः, महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री थीं, जिन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है। उनका जन्म 1907 में फर्रुखाबाद में हुआ था। उनकी प्रसिद्ध रचना 'यामा' है, जिसके लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

Quick Tip

महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय लिखते समय उन्हें मिली उपाधियों जैसे 'आधुनिक युग की मीरा' और 'वेदना की गायिका' का उल्लेख अवश्य करें। साथ ही 'छायावाद के चार स्तंभों' में से एक के रूप में उनका महत्व बताएं।

6(ख)(iii). निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए : मैथिलीशरण गुप्त ।

उत्तर :

जीवन-परिचय : राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 ई० में झाँसी जिले के चिरगाँव में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण गुप्त भी एक अच्छे कवि थे। गुप्त जी पर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का गहरा प्रभाव था। गाँधीजी ने इन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया। इनका निधन सन् 1964 ई० में हुआ।

प्रमुख रचना : साकेत (महाकाव्य)।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न में कवि का जीवन-परिचय और उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख करना है। जीवन-परिचय में जन्म, स्थान, साहित्यिक प्रेरणा, सम्मान और मृत्यु का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

मैथिलीशरण गुप्त (सन् 1886 ई० - सन् 1964 ई०)

- **जीवन-परिचय :** हिन्दी साहित्य के गौरव, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त, 1886 ई० को झाँसी के निकट चिरगाँव में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण गुप्त स्वयं एक अच्छे कवि थे, जिससे गुप्त जी को कविता की प्रेरणा विरासत में मिली। इन्होंने घर पर ही हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी का अध्ययन किया। ये आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को अपना काव्य-गुरु मानते थे और उन्हीं के मार्गदर्शन में इन्होंने अपनी काव्य-कला को निखारा। इनकी कविताओं में राष्ट्र-प्रेम की भावना कूट-कूटकर भरी है, इसी कारण महात्मा गाँधी ने इन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि प्रदान की। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया। 12 दिसम्बर, 1964 ई० को माँ भारती का यह सच्चा सपूत पंचतत्व में विलीन हो गया।
- **साहित्यिक परिचय :** गुप्त जी द्विवेदी युग के सबसे लोकप्रिय कवि थे। इन्होंने खड़ी बोली को काव्य की भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनकी रचनाओं का मुख्य विषय भारतीय संस्कृति, इतिहास और राष्ट्र-प्रेम है। इन्होंने उपेक्षित नारी पात्रों (जैसे उर्मिला, यशोधरा) को अपने काव्य का विषय बनाकर उन्हें गौरव प्रदान किया।
- **प्रमुख रचनाएँ :**
 - महाकाव्य : साकेत।
 - खण्डकाव्य : जयदरथ-वध, भारत-भारती, पंचवटी, यशोधरा, द्वापर।
 - अनूदित रचनाएँ : प्लासी का युद्ध, मेघनाद-वध।

Step 4: Final Answer:

अतः, मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के महान कवि थे, जिन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से जाना जाता है। उनका जन्म 1886 में चिरगाँव (झाँसी) में हुआ था। उनका प्रसिद्ध महाकाव्य 'साकेत' है।

Quick Tip

मैथिलीशरण गुप्त का परिचय लिखते समय 'राष्ट्रकवि' उपाधि का उल्लेख अवश्य करें और यह बताएं कि यह उपाधि उन्हें महात्मा गाँधी ने दी थी। 'खड़ी बोली' के विकास में उनके योगदान का जिक्र करना भी महत्वपूर्ण है।

7. अपनी पाठ्यपुस्तक में से कण्ठस्थ कोई एक श्लोक लिखिए, जो इस प्रश्नपत्र में न आया हो।

उत्तर :

श्लोक :

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥

अर्थ:

सभी सुखी हों, सभी निरोगी (रोगमुक्त) हों।

सभी का कल्याण हो, कोई भी दुःखी न हो।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

इस प्रश्न में परीक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी संस्कृत की पाठ्यपुस्तक से याद किया हुआ कोई भी एक श्लोक लिखेगा। शर्त यह है कि वह श्लोक प्रश्नपत्र में पहले से उद्धृत नहीं होना चाहिए।

Step 3: Detailed Explanation:

उपरोक्त श्लोक एक प्रसिद्ध और सरल श्लोक है जो अक्सर हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों के संस्कृत-खण्ड में शामिल होता है। यह विश्व-कल्याण की भावना को व्यक्त करता है।

- यह श्लोक दो पंक्तियों और चार चरणों में है, जो संस्कृत श्लोक के मानक प्रारूप का पालन करता है।
- इसकी भाषा सरल और अर्थ स्पष्ट है।
- यह एक नैतिक और सार्वभौमिक संदेश देता है।
- यह प्रश्न की शर्त को पूरा करता है कि यह प्रश्नपत्र में नहीं आया है (यह मानते हुए कि प्रश्नपत्र में कोई अन्य श्लोक दिया गया होगा)।

परीक्षार्थी अपनी स्मृति के आधार पर कोई अन्य उपयुक्त श्लोक भी लिख सकते हैं।

Step 4: Final Answer:

अतः, ऊपर लिखा गया 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' श्लोक इस प्रश्न के उत्तर के रूप में एक आदर्श उदाहरण है, क्योंकि यह पाठ्यपुस्तक से लिया गया एक कंठस्थ श्लोक है और प्रश्नपत्र में नहीं आया है।

Quick Tip

परीक्षा की तैयारी करते समय, अपनी पाठ्यपुस्तक के संस्कृत-खण्ड से कम से कम दो-तीन सरल और स्पष्ट अर्थ वाले श्लोक अच्छी तरह याद कर लें। इससे यदि एक श्लोक प्रश्नपत्र में आ भी जाए, तो आप दूसरा लिख सकें।

8. वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अपने चचेरे भाई को बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

उत्तर :

15, सिविल लाइन्स,

प्रयागराज।

दिनांक: 25 सितम्बर, 2025

प्रिय भाई रमेश,

सस्नेह नमस्ते।

आज सुबह ही पिताजी से तुम्हारा पत्र मिला, जिसे पढ़कर मन प्रसन्नता से भर गया। यह जानकर हम सभी को बहुत खुशी हुई कि तुमने अंतर-विद्यालयी वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त

किया है। तुम्हारी इस शानदार सफलता के लिए मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करो।

मुझे हमेशा से विश्वास था कि तुम्हारी तर्क-शक्ति और बोलने की अद्भुत क्षमता तुम्हें एक दिन अवश्य सफलता दिलाएगी। तुमने अपनी मेहनत और लगन से यह सिद्ध कर दिया है। यह न केवल तुम्हारे लिए बल्कि पूरे परिवार के लिए गर्व का क्षण है। मुझे आशा है कि तुम भविष्य में भी इसी प्रकार सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते रहोगे।

घर पर माताजी और पिताजी भी तुम्हारी इस उपलब्धि पर बहुत प्रसन्न हैं और तुम्हें ढेर सारा आशीर्वाद भेज रहे हैं।

एक बार फिर से बहुत-बहुत बधाई।

तुम्हारा भाई,
सुरेश

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह एक अनौपचारिक पत्र (Informal Letter) है। इसमें व्यक्तिगत खुशी और बधाई का भाव व्यक्त करना है। इसकी भाषा सरल और आत्मीय होती है।

Step 3: Detailed Explanation:

अनौपचारिक पत्र लिखने की संरचना इस प्रकार है :

- **प्रेषक का पता :** सबसे ऊपर बाईं ओर पत्र लिखने वाले का पता लिखा जाता है।
- **दिनांक :** पते के ठीक नीचे दिनांक लिखी जाती है।
- **संबोधन :** जिसे पत्र लिखा जा रहा है, उसके लिए उचित संबोधन का प्रयोग किया जाता है (जैसे- प्रिय भाई, आदरणीय पिताजी)।
- **अभिवादन :** संबोधन के अनुसार अभिवादन लिखा जाता है (जैसे- सस्नेह नमस्ते, सादर प्रणाम)।
- **विषय-वस्तु :** यह पत्र का मुख्य भाग है। इसे अनुच्छेदों में बांटा जाता है। पहले अनुच्छेद में हाल-चाल और पत्र लिखने का कारण बताया जाता है। दूसरे अनुच्छेद में मुख्य विषय (बधाई संदेश, सफलता की प्रशंसा) का विस्तार किया जाता है। तीसरे अनुच्छेद में परिवार के अन्य सदस्यों का जिक्र और शुभकामनाएँ दी जाती हैं।
- **समापन :** अंत में संबंध सूचक शब्द (जैसे- तुम्हारा भाई, आपका पुत्र) लिखा जाता है।
- **प्रेषक का नाम :** सबसे अंत में पत्र लिखने वाले का नाम लिखा जाता है।

Step 4: Final Answer:

ऊपर दिया गया पत्र अनौपचारिक पत्र के सभी नियमों का पालन करता है। इसमें उचित प्रारूप, आत्मीय भाषा और बधाई के संदेश का सुंदर समावेश है।

Quick Tip

अनौपचारिक पत्र लिखते समय भाषा को स्वाभाविक और सरल रखें। पत्र में अपनी भावनाओं को खुलकर व्यक्त करें ताकि पत्र में अपनापन लगे। मुख्य संदेश को स्पष्ट रूप से लिखें।

8. अथवा

आपके विद्यालय के पुस्तकालय में हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ नहीं मँगाई जातीं। इसकी शिकायत करते हुए प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।

उत्तर :

सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य जी,

जवाहर पब्लिक स्कूल,

लखनऊ।

विषय : पुस्तकालय में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की अनुपलब्धता के संबंध में।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं कक्षा १०-अ का छात्र हूँ। मैं आपका ध्यान विद्यालय के पुस्तकालय की एक कमी की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। हमारे विद्यालय के पुस्तकालय में अंग्रेजी के तो अनेक समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती हैं, परन्तु हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं का सर्वथा अभाव है।

हिन्दी हमारी राजभाषा है और हम छात्रों में से अधिकांश की मातृभाषा भी है। हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाएँ (जैसे 'हंस', 'नया ज्ञानोदय') और सामान्य ज्ञान तथा विज्ञान से संबंधित पत्रिकाएँ (जैसे 'प्रतियोगिता दर्पण', 'विज्ञान प्रगति') हम छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। इनके अध्ययन से न केवल हमारे साहित्यिक ज्ञान में वृद्धि होगी, बल्कि हम समसामयिक विषयों से भी अवगत हो सकेंगे।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि कृपया पुस्तकालय में नियमित रूप से कुछ स्तरीय हिन्दी समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ मँगवाने की कृपा करें। इस कार्य के लिए हम सभी छात्र आपके अत्यंत आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

आपका आज्ञाकारी शिष्य,

क० ख० ग०

कक्षा-१० (अ)

दिनांक: 25 सितम्बर, 2025

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह एक औपचारिक पत्र (Formal Letter) या प्रार्थना-पत्र है। इसमें विद्यालय के प्रधानाचार्य से एक समस्या का समाधान करने का अनुरोध किया गया है। इसकी भाषा विनम्र, शिष्ट और संक्षिप्त होनी

चाहिए।

Step 3: Detailed Explanation:

प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र लिखने की संरचना इस प्रकार है :

- **प्रारम्भ :** पत्र के आरम्भ में बाईं ओर 'सेवा में,' लिखकर अगली पंक्ति में प्रधानाचार्य का पद, विद्यालय का नाम और स्थान लिखा जाता है।
- **विषय :** इसके बाद 'विषय' लिखकर पत्र का उद्देश्य एक पंक्ति में स्पष्ट रूप से बताया जाता है।
- **संबोधन :** 'महोदय' या 'महोदया' जैसे सम्मानसूचक संबोधन का प्रयोग किया जाता है।
- **विषय-वस्तु :** इसे दो या तीन अनुच्छेदों में विभाजित किया जाता है। पहले अनुच्छेद में विनम्रतापूर्वक अपना परिचय (नाम, कक्षा) देते हुए समस्या का उल्लेख किया जाता है। दूसरे अनुच्छेद में उस समस्या से होने वाली कठिनाई और उसके समाधान के लाभ बताए जाते हैं।
- **अनुरोध और समापन :** अंतिम अनुच्छेद में समस्या के समाधान के लिए विनम्र अनुरोध किया जाता है और आभार व्यक्त किया जाता है।
- **स्वनिर्देश :** अंत में 'आपका आज्ञाकारी शिष्य/शिष्या' लिखकर अपना नाम (परीक्षा में क० ख० ग०), कक्षा और दिनांक लिखा जाता है।

Step 4: Final Answer:

ऊपर दिया गया पत्र औपचारिक पत्र के सभी प्रारूपों का सही ढंग से पालन करता है। इसमें विषय को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है और भाषा विनम्र एवं मर्यादित है।

Quick Tip

प्रधानाचार्य को पत्र लिखते समय 'विषय' (Subject) लिखना अनिवार्य है। अपनी समस्या को स्पष्ट और संक्षिप्त रूप में बताएं और समाधान के लिए विनम्रतापूर्वक अनुरोध करें। परीक्षा में अपना वास्तविक नाम न लिखकर 'क० ख० ग०' या 'अ० ब० स०' लिखें।

9(i). वाराणसी केषां संगमस्थली अस्ति ?

उत्तर :

वाराणसी विविधधर्माणां संगमस्थली अस्ति।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न संस्कृत गद्य पाठ 'वाराणसी' से लिया गया है। इसमें पूछा गया है कि वाराणसी किनकी संगम-स्थली (मिलने का स्थान) है।

Step 3: Detailed Explanation:

प्रश्न 'केषां' (किनकी) षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप है, इसलिए उत्तर भी षष्ठी विभक्ति बहुवचन में

होना चाहिए।

पाठ के अनुसार, वाराणसी नगरी विविध धर्मों और संस्कृतियों के मिलन का केंद्र रही है।

अतः, प्रश्न का सही उत्तर होगा कि वाराणसी विविध धर्मों की संगम-स्थली है।

संस्कृत में इसे इस प्रकार लिखेंगे :

वाराणसी विविधधर्माणां संगमस्थली अस्ति। (वाराणसी विविध धर्मों की संगम-स्थली है।)

Step 4: Final Answer:

अतः, दिए गए प्रश्न का सही और पूर्ण संस्कृत उत्तर है : वाराणसी विविधधर्माणां संगमस्थली अस्ति।

Quick Tip

संस्कृत में प्रश्नों का उत्तर देते समय, प्रश्नवाचक शब्द (किम्, कुत्र, कदा, केषां आदि) की विभक्ति और वचन को पहचानें। उत्तर उसी विभक्ति और वचन में देने का प्रयास करें।

9(ii). अस्माकं मुख्यं कर्तव्यं किम् ?

उत्तर :

अस्माकं मुख्यं कर्तव्यं देशसेवा अस्ति।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न नैतिक शिक्षा या नागरिक शास्त्र से संबंधित पाठ पर आधारित हो सकता है। इसमें पूछा गया है कि हमारा मुख्य कर्तव्य क्या है।

Step 3: Detailed Explanation:

प्रश्न 'किम्' (क्या) एक सामान्य प्रश्नवाचक शब्द है। इसका उत्तर विषय के संदर्भ में दिया जाना चाहिए।

सामान्यतः, एक नागरिक का मुख्य कर्तव्य राष्ट्र की सेवा करना माना जाता है।

इस भाव को संस्कृत में व्यक्त करने के लिए 'देशसेवा' या 'राष्ट्रभक्ति' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है।

वाक्य इस प्रकार बनेगा :

अस्माकं मुख्यं कर्तव्यं देशसेवा अस्ति। (हमारा मुख्य कर्तव्य देशसेवा है।)

Step 4: Final Answer:

अतः, दिए गए प्रश्न का एक उपयुक्त संस्कृत उत्तर है : अस्माकं मुख्यं कर्तव्यं देशसेवा अस्ति।

Quick Tip

यदि प्रश्न किसी विशिष्ट पाठ से न हो, तो उसका सामान्य और नैतिक उत्तर दें। वाक्य संरचना सरल रखें ताकि व्याकरण संबंधी त्रुटियों की संभावना कम हो।

9(iii). अलक्षेन्द्रः सेनापतिं किम् आदिशत् ?

उत्तर :

अलक्षेन्द्रः सेनापतिं पुरुराजस्य बन्धनानि मोचयितुम् आदिशत् ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न 'वीरः वीरेण पूज्यते' नामक पाठ से है, जिसमें सिकंदर (अलक्षेन्द्र) और पुरुराज के बीच का संवाद है। इसमें पूछा गया है कि सिकंदर ने सेनापति को क्या आदेश दिया।

Step 3: Detailed Explanation:

पाठ के अंत में, पुरुराज की वीरता से प्रभावित होकर सिकंदर उसे मित्र बना लेता है।

वह अपने सेनापति को पुरुराज के बंधन खोलने का आदेश देता है।

इस घटना को संस्कृत में लिखने के लिए 'आदिशत्' (आदेश दिया) क्रिया का प्रयोग किया जाएगा।

'पुरुराज के बंधन' के लिए 'पुरुराजस्य बन्धनानि' और 'खोलने के लिए' 'मोचयितुम्' का प्रयोग होगा।

वाक्य इस प्रकार बनेगा :

अलक्षेन्द्रः सेनापतिं पुरुराजस्य बन्धनानि मोचयितुम् आदिशत् । (सिकंदर ने सेनापति को पुरुराज के बंधन खोलने का आदेश दिया।)

Step 4: Final Answer:

अतः, पाठ के आधार पर इस प्रश्न का सही संस्कृत उत्तर है : अलक्षेन्द्रः सेनापतिं पुरुराजस्य बन्धनानि मोचयितुम् आदिशत् ।

Quick Tip

संस्कृत के पाठों की कहानी को हिन्दी में अच्छी तरह समझ लें। इससे आपको संस्कृत में उत्तर देने में बहुत सहायता मिलेगी, क्योंकि आप घटनाक्रम को जानते होंगे।

9(iv). भूमेः गुरुतरं किम् अस्ति ?

उत्तर :

माता भूमेः गुरुतरा अस्ति ।

Solution:

Step 1: Understanding the Concept:

यह प्रश्न 'जीवन सूत्रानि' पाठ से लिया गया है, जो यक्ष और युधिष्ठिर के संवाद पर आधारित है। इसमें यक्ष पूछता है कि भूमि से भारी (अधिक गौरवशाली) क्या है ?

Step 3: Detailed Explanation:

यक्ष के इस प्रश्न का उत्तर युधिष्ठिर देते हैं कि माता का स्थान भूमि से भी बढ़कर है।

प्रश्न में 'गुरुतरं' (अधिक भारी/महान) विशेषण का प्रयोग किया गया है।

उत्तर में भी इसी भाव को व्यक्त करना है।

श्लोक के अनुसार उत्तर है : 'माता गुरुतरा भूमेः' अर्थात् माता भूमि से अधिक भारी है।

इसे पूर्ण वाक्य में इस प्रकार लिखेंगे :

माता भूमेः गुरुतरा अस्ति। (माता भूमि से अधिक भारी/महान हैं।)

Step 4: Final Answer:

अतः, दिए गए प्रश्न का सही और पूर्ण संस्कृत उत्तर है : माता भूमेः गुरुतरा अस्ति।

Quick Tip

'जीवन सूत्रानि' जैसे श्लोक आधारित पाठों के प्रत्येक श्लोक का अर्थ अच्छी तरह समझ लें, क्योंकि प्रश्न सीधे श्लोकों की पंक्तियों से पूछे जाते हैं।

10(i). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : स्वच्छ भारत अभियान

उत्तर :

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका मुख्य उद्देश्य भारत को स्वच्छ और सुंदर बनाना है। यह केवल एक सरकारी योजना नहीं, बल्कि एक जन-आंदोलन है जिसमें प्रत्येक नागरिक की भागीदारी आवश्यक है।

Solution:

स्वच्छ भारत अभियान

- **प्रस्तावना :** 'स्वच्छता ही सेवा है' और 'जहाँ स्वच्छता है, वहाँ ईश्वर का वास होता है' - ये विचार भारतीय संस्कृति के मूल में रहे हैं। इसी भावना को साकार रूप देने के लिए भारत सरकार ने 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गाँधी की जयंती पर 'स्वच्छ भारत अभियान' का शुभारंभ किया। इसका लक्ष्य भारत की गलियों, सड़कों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों को साफ-सुथरा करना है।
- **अभियान के उद्देश्य :** इस अभियान के कई प्रमुख उद्देश्य हैं, जैसे :
 - खुले में शौच की प्रथा को समाप्त करना और शौचालयों का निर्माण करना।
 - ठोस और तरल कचरे का उचित प्रबंधन करना।
 - लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा करना।
 - पीने के लिए स्वच्छ जल की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- **अभियान का प्रभाव और महत्व :** इस अभियान के कारण देश में स्वच्छता के स्तर में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। करोड़ों शौचालयों का निर्माण हुआ है, जिससे महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान बढ़ा है तथा बीमारियों में कमी आई है। गंगा नदी की सफाई के लिए 'नमामि गंगे' जैसी परियोजनाएँ भी इसी का हिस्सा हैं। स्वच्छ भारत से देश की छवि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर हुई है और पर्यटन को भी बढ़ावा मिला है।

- **चुनौतियाँ और नागरिक कर्तव्य :** इस अभियान के मार्ग में कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जैसे लोगों की पुरानी आदतों को बदलना और कचरा प्रबंधन के लिए स्थायी व्यवस्था बनाना। यह केवल सरकार का ही नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अपने घर, मोहल्ले और शहर को स्वच्छ रखे। हमें कूड़ा-कचरा कूड़ेदान में ही डालना चाहिए और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- **उपसंहार :** स्वच्छ भारत अभियान एक क्रांतिकारी कदम है। इसने स्वच्छता को एक राष्ट्रीय एजेंडा बना दिया है। यदि सभी नागरिक मिलकर इस अभियान को सफल बनाने का संकल्प लें, तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा भारत विश्व के सबसे स्वच्छ और सुंदर देशों में गिना जाएगा।

Quick Tip

निबंध लिखते समय उसे अलग-अलग शीर्षकों (जैसे प्रस्तावना, उद्देश्य, महत्व, उपसंहार) में बाँटकर लिखें। इससे निबंध व्यवस्थित लगता है और परीक्षक पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। महत्वपूर्ण तिथियों और नारों का उल्लेख अवश्य करें।

10(ii). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : प्रदूषण की समस्या और समाधान

उत्तर :

प्रदूषण आज विश्व की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है, जो मानव जीवन के लिए एक बड़ा खतरा बन चुका है। प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और औद्योगिक विकास ने इस समस्या को विकराल रूप दे दिया है। इसका समाधान सामूहिक प्रयासों से ही संभव है।

Solution:

प्रदूषण की समस्या और समाधान

- **प्रस्तावना :** प्रकृति ने हमें स्वच्छ जल, शुद्ध वायु और एक स्वस्थ वातावरण प्रदान किया है, किन्तु मानव ने अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए इन प्राकृतिक उपहारों को दूषित कर दिया है। पर्यावरण के विभिन्न घटकों - वायु, जल, मिट्टी आदि का अवांछित रूप से गंदा हो जाना ही 'प्रदूषण' कहलाता है। आज यह समस्या केवल भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए एक चुनौती बन गई है।
- **प्रदूषण के प्रकार और कारण :** प्रदूषण मुख्य रूप से चार प्रकार का होता है :
 - वायु प्रदूषण : कारखानों और वाहनों से निकलने वाला धुआँ, वनों की कटाई।
 - जल प्रदूषण : कारखानों का रासायनिक कचरा और शहरों का गंदा पानी नदियों में मिलना।
 - मृदा (भूमि) प्रदूषण : कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग, प्लास्टिक का बढ़ता उपयोग।
 - ध्वनि प्रदूषण : वाहनों का शोर, लाउडस्पीकर, कारखानों की मशीनें।
- **प्रदूषण के दुष्प्रभाव :** प्रदूषण का मानव स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। दूषित वायु से श्वास संबंधी रोग होते हैं, दूषित जल से पेट की बीमारियाँ होती हैं और ध्वनि प्रदूषण से मानसिक तनाव बढ़ता है। प्रदूषण के कारण ओजोन परत में छेद हो रहा है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

- **समस्या का समाधान :** प्रदूषण को रोकने के लिए सरकारी और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर प्रयास आवश्यक हैं।
 - अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए।
 - कारखानों पर दूषित जल और धुएँ के उचित निस्तारण के लिए कड़े नियम लागू करने चाहिए।
 - प्लास्टिक का उपयोग बंद करना चाहिए।
 - सौर ऊर्जा जैसे ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को अपनाना चाहिए।
 - लोगों में जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है।
- **उपसंहार :** पर्यावरण को स्वच्छ रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। यदि हमने समय रहते इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया, तो हमारी आने वाली पीढ़ियों का जीवन संकट में पड़ जाएगा। अतः हमें मिलकर यह संकल्प लेना होगा कि हम अपने पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाएँगे।

Quick Tip

प्रदूषण जैसे विषय पर निबंध लिखते समय, केवल समस्या का वर्णन न करें, बल्कि उसके समाधानों पर विशेष ध्यान दें। अपने सुझावों को सरकारी और व्यक्तिगत स्तर पर बाँटकर प्रस्तुत करें।

10(iii). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : कोरोना : एक वैश्विक महामारी

उत्तर :

कोरोनावायरस (कोविड-19) एक संक्रामक रोग है जिसने 21वीं सदी की सबसे बड़ी वैश्विक महामारी का रूप ले लिया। इसने न केवल करोड़ों लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित किया, बल्कि विश्व की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को भी झकझोर कर रख दिया।

Solution:

कोरोना : एक वैश्विक महामारी

- **प्रस्तावना :** वर्ष 2019 के अंत में चीन के वुहान शहर से शुरू हुई एक रहस्यमयी बीमारी ने देखते ही देखते पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने इसे 'कोरोनावायरस' या 'कोविड-19' नाम दिया और जल्द ही इसे एक वैश्विक महामारी घोषित कर दिया। यह एक ऐसा संकट था जिसके लिए विश्व तैयार नहीं था।
- **कोरोना का संक्रमण और लक्षण :** यह वायरस मुख्य रूप से संक्रमित व्यक्ति के खाँसने या छींकने से हवा में फैले कणों के माध्यम से फैलता है। इसके सामान्य लक्षणों में बुखार, सूखी खाँसी, गले में खराश और साँस लेने में तकलीफ शामिल हैं। इस वायरस ने अपने स्वरूप में कई बार बदलाव (म्यूटेशन) किया, जिससे यह और भी खतरनाक होता गया।
- **महामारी का प्रभाव :** कोरोना महामारी का प्रभाव बहुआयामी रहा :

- **सामाजिक प्रभाव :** संक्रमण को रोकने के लिए लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग जैसे उपाय अपनाए गए, जिससे लोगों का सामाजिक जीवन लगभग समाप्त हो गया। स्कूल, कॉलेज और दफ्तर बंद हो गए।
- **आर्थिक प्रभाव :** व्यापार और उद्योग-धंधे बंद होने से विश्व की अर्थव्यवस्था चरमरा गई। करोड़ों लोगों की नौकरियाँ चली गईं और गरीबी बढ़ गई।
- **स्वास्थ्य प्रभाव :** दुनिया भर की स्वास्थ्य सेवाएँ दबाव में आ गईं। अस्पतालों में बेड और ऑक्सीजन की कमी हो गई।
- **भारत की भूमिका और समाधान :** भारत ने इस महामारी का डटकर मुकाबला किया। समय पर लॉकडाउन लगाना, बड़े पैमाने पर टेस्टिंग करना और 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के तहत स्वदेशी वैक्सीन (जैसे कोविशील्ड, कोवैक्सीन) का निर्माण करना महत्वपूर्ण कदम थे। भारत ने 'वैक्सीन मैत्री' के तहत दुनिया के कई देशों को टीके उपलब्ध कराकर मानवता की सेवा की।
- **उपसंहार :** कोरोना महामारी ने हमें बहुत कुछ सिखाया है। इसने हमें स्वास्थ्य सेवाओं के महत्व, स्वच्छता की आदत और प्रकृति के साथ संतुलन बनाने की सीख दी है। यद्यपि यह संकट बहुत बड़ा था, किन्तु मानव जाति ने विज्ञान, सहयोग और धैर्य के बल पर इस पर विजय प्राप्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है।

Quick Tip

कोरोना जैसे समसामयिक विषय पर निबंध लिखते समय, सटीक आँकड़ों के बजाय उसके प्रभावों (सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य) का विश्लेषण करें। भारत द्वारा उठाए गए सकारात्मक कदमों (जैसे वैक्सीन निर्माण) का उल्लेख अवश्य करें।

10(iv). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : सड़क-सुरक्षा : जीवन-रक्षा

उत्तर :

'सड़क-सुरक्षा : जीवन-रक्षा' का अर्थ है सड़क पर चलते या वाहन चलाते समय उन नियमों का पालन करना जो हमें और दूसरों को दुर्घटनाओं से बचाते हैं। आज के तेज रफ्तार जीवन में सड़क सुरक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'।

Solution:

सड़क-सुरक्षा : जीवन-रक्षा

- **प्रस्तावना :** विज्ञान ने हमें मोटर-गाड़ी, बस, ट्रेन जैसे तेज गति के वाहन देकर जीवन को आसान बनाया है, लेकिन साथ ही सड़क दुर्घटनाओं का खतरा भी बढ़ा दिया है। हर दिन समाचार-पत्रों में सड़क दुर्घटनाओं की खबरें छपती हैं, जिनमें हजारों लोग अपनी जान गँवा देते हैं या अपाहिज हो जाते हैं। इन दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि हमारा जीवन अमूल्य है।
- **सड़क दुर्घटनाओं के कारण :** सड़क दुर्घटनाओं के कई प्रमुख कारण हैं:

- तेज गति से वाहन चलाना।
 - यातायात के नियमों (जैसे लाल बत्ती, जेब्रा क्रॉसिंग) का उल्लंघन करना।
 - नशे में या मोबाइल पर बात करते हुए गाड़ी चलाना।
 - हेलमेट या सीट-बेल्ट का प्रयोग न करना।
 - सड़कों की खराब हालत।
- **सुरक्षा के उपाय :** सड़क पर सुरक्षित रहने के लिए कुछ सरल नियमों का पालन करना अनिवार्य है :
 - **वाहन चालकों के लिए :** हमेशा हेलमेट या सीट-बेल्ट पहनें। गति-सीमा का ध्यान रखें। नशे में वाहन न चलाएँ। ट्रैफिक सिग्नलों का पालन करें।
 - **पैदल चलने वालों के लिए :** हमेशा फुटपाथ पर चलें। सड़क पार करते समय जेब्रा क्रॉसिंग का उपयोग करें और दोनों तरफ देखकर ही सड़क पार करें।
 - **सरकार की भूमिका :** सरकार का कर्तव्य है कि वह सड़कों की मरम्मत कराए, यातायात नियमों का कड़ाई से पालन करवाए और लोगों को 'सड़क सुरक्षा सप्ताह' जैसे अभियानों के माध्यम से जागरूक करे। स्कूलों में बच्चों को यातायात के नियमों की शिक्षा दी जानी चाहिए।
 - **उपसंहार :** सड़क सुरक्षा केवल एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझे और यातायात के नियमों का पालन करे, तो हम अनगिनत बहुमूल्य जीवनों को बचा सकते हैं। हमें यह याद रखना चाहिए कि 'घर पर कोई हमारा इंतजार कर रहा है' और 'सुरक्षा ही जीवन का आधार है'।

Quick Tip

इस विषय पर निबंध लिखते समय, सुरक्षा उपायों को अलग-अलग वर्गों (जैसे वाहन चालकों, पैदल यात्रियों) में बाँटकर लिखें। 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी' जैसे नारों का प्रयोग निबंध को प्रभावशाली बनाता है।

10(v). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए : मोबाइल : वरदान या अभिशाप ।

उत्तर :

मोबाइल फोन विज्ञान का एक अद्भुत आविष्कार है, जिसने संचार की दुनिया में क्रांति ला दी है। यह ज्ञान और मनोरंजन का भंडार है। किन्तु, किसी भी वस्तु की तरह इसका अत्यधिक और गलत उपयोग इसे वरदान के बजाय अभिशाप बना देता है।

Solution:

मोबाइल : वरदान या अभिशाप

- **प्रस्तावना :** आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के अनेक चमत्कारी आविष्कारों में से एक है मोबाइल फोन। आज मोबाइल फोन केवल बात करने का उपकरण नहीं, बल्कि एक चलता-फिरता

कंप्यूटर बन गया है। इसने दुनिया को हमारी मुट्ठी में कैद कर दिया है। लेकिन हर सिक्के के दो पहलुओं की तरह, मोबाइल के लाभ भी हैं और हानियाँ भी। यह हम पर निर्भर करता है कि हम इसे वरदान बनाते हैं या अभिशाप।

- **मोबाइल फोन : एक वरदान :** मोबाइल फोन के लाभ अनगिनत हैं:

- **संचार का साधन :** हम कहीं से भी, कभी भी अपने मित्रों और रिश्तेदारों से जुड़ सकते हैं।
- **ज्ञान का भंडार :** इंटरनेट के माध्यम से हम कोई भी जानकारी तुरंत प्राप्त कर सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए यह शिक्षा का एक उत्तम साधन है।
- **मनोरंजन का केंद्र :** हम इस पर संगीत सुन सकते हैं, फिल्में देख सकते हैं और गेम खेल सकते हैं।
- **दैनिक जीवन में सहायक :** ऑनलाइन बैंकिंग, शॉपिंग, टिकट बुकिंग जैसे कामों ने जीवन को बहुत सरल बना दिया है।

- **मोबाइल फोन : एक अभिशाप :** मोबाइल फोन का दुरुपयोग इसे अभिशाप बना देता है :

- **स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव :** इसके अत्यधिक उपयोग से आँखों पर जोर पड़ता है और नींद की समस्या होती है।
- **समय की बर्बादी :** छात्र और युवा सोशल मीडिया और गेमिंग में अपना कीमती समय बर्बाद कर देते हैं, जिससे उनकी पढ़ाई और करियर पर बुरा असर पड़ता है।
- **सामाजिक दूरी :** लोग अपने पास बैठे लोगों से बात करने के बजाय मोबाइल में लगे रहते हैं, जिससे सामाजिक और पारिवारिक रिश्ते कमजोर हो रहे हैं।
- **दुर्घटनाओं का कारण :** वाहन चलाते समय मोबाइल का उपयोग जानलेवा साबित हो सकता है।

- **उपसंहार :** निःसंदेह मोबाइल फोन एक अत्यंत उपयोगी उपकरण है। यह एक शक्तिशाली औजार की तरह है, जिसका प्रयोग निर्माण और विनाश दोनों के लिए हो सकता है। हमें इसका दास नहीं, बल्कि स्वामी बनना चाहिए। यदि हम मोबाइल का उपयोग विवेक और संतुलन के साथ करें, तो यह हमारे लिए निश्चित रूप से एक वरदान ही सिद्ध होगा।

Quick Tip

'वरदान या अभिशाप' जैसे विषयों पर निबंध लिखते समय, दोनों पक्षों (लाभ और हानि) का संतुलित वर्णन करें। अंत में, अपनी राय देते हुए बताएं कि इसका सही उपयोग कैसे किया जा सकता है।